A Daily News Magazine
इंदौर
बुधवार, 10 अप्रैल, 2024

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 178 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

नूतन का अभिनंदन हो
प्रेम-पुलकमय जन-जन हो!
नव-स्फूर्ति भर दे नव-चेतन
टूट पड़ें जड़ता के बंधन;
शुद्ध, स्वतंत्र वायुमंडल में
निर्मल तन, निर्भय मन हो!
प्रेम-पुलकमय जन-जन हो,
नूतन का अभिनंदन हो!
प्रति अंतर हो पुलकित-हुलसित
प्रेम-दिए जल उठें सुवासित
जीवन का क्षण-क्षण हो ज्योतित,
शिवता का आराधन हो!
प्रेम-पुलकमय प्रति जन हो,
नूतन का अभिनंदन हो!

– फणीश्वरनाथ रेणु

प्रसंगवश

तमिलनाडु : एआईएडीएमके व बीजेपी में 15 सीटों पर सीधी टक्कर होगी

वर्षा श्रीराम

कोयंबटूर के रहने वाले ड्राइवर, 55 साल के गुणशेखरन ने लगभग 37 साल से अखिल भारतीय द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (एआईएडीएमके) का समर्थन किया है। हालांकि, तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्रियों एमजी रामचंद्रन और जे. जयललिता के प्रशंसक गुणशेखरन कहते हैं कि पिछले 1.5 वर्षों में वह पार्टी की कार्यप्रणाली से नाराज हैं। अगर आप पिछले चार सालों में देखें तो जयललिता की मौत के बाद पार्टी में कई समस्याएं आई हैं। पलानीस्वामी और ओपीएस (ओ. पनीरसेल्वम) के बीच भी आंतरिक मतभेद थे। मौजूदा एआईएडीएमके नेतृत्व को पहचान के संकट का सामना करना पड़ रहा है। 2019 लोकसभा चुनाव और 2021 विधानसभा के दोनों चुनाव एक साथ लड़ने और दोनों हारने के बाद, यह वही एआईएडीएमके थी, जिसने सितंबर 2023 में गठबंधन से बाहर निकलने का फैसला किया और तमिलनाडु में बीजेपी के साथ पांच साल की लंबे गठबंधन को समाप्त कर दिया। अब 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले तमिलनाडु के तनावपूर्ण राजनीतिक माहौल में दोस्त से दुश्मन बनी दोनो पार्टियां 15 सीटों पर सीधे मुकाबले में हैं।

गुणशेखरन ने कहा यह एआईएडीएमके का बेहद खराब फैसला है और इससे निश्चित रूप से उन्हें नुकसान होगा। उन्हें बीजेपी के साथ रहना चाहिए था क्योंकि उनके पास उचित नेतृत्व नहीं है। एक मतदाता के रूप में, मैं अपनी उम्मीद बीजेपी पर रखूंगा। एआईएडीएमके के इस कदम से तमिलनाडु की राजनीति पर काफी प्रभाव पड़ने की संभावना है। हालांकि यह अप्रत्याशित नहीं था। कई मुद्दों पर नेतृत्व में मतभेद थे। तमिलनाडु स्थित पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक मालन नारायणन ने बताया कि दो प्रकार के पारंपरिक एआईएडीएमके के मतदाता हैं - एक, जिन्होंने जयललिता के लिए पार्टी को वोट दिया। दो, वे जो डीएमके विरोधी हैं।

तमिलनाडु में, केवल दो मोर्चे (एआईएडीएमके और डीएमके रहे हैं। इसलिए डीएमके विरोधी मतदाताओं के लिए एआईएडीएमके को वोट देना आसान था, क्योंकि उनके लिए कोई अन्य विकल्प नहीं था। तीसरा विकल्प उपलब्ध होने से, सभी डीएमके विरोधी वोट सामूहिक रूप से एआईएडीएमके को नहीं मिलेंगे। तो उस हिसाब से एआईएडीएमके को नुकसान होगा। इसी तरह सभी डीएमके विरोधी वोट एआईएडीएमके को नहीं जाएंगे।

45 वर्षीय रंगनाथन, जाति से ब्राह्मण और कोयंबटूर में एक निजी रियल-एस्टेट कंपनी में कर्मचारी हैं। उन्होंने बताया कि उन्होंने ऐतिहासिक रूप से एआईएडीएमके का समर्थन किया है, क्योंकि वह डीएमके विरोधी हैं। लेकिन अब, मैं बीजेपी जैसी राष्ट्रीय पार्टी को पसंद करता हूं, जिसके पास एक पीएम चेहरा है।

चेन्नई के एक एआईएडीएमके समर्थक ने नाम न छापने की शर्त पर बताया, भले ही मैं एआईएडीएमके के प्रदर्शन से नाखुश हूं, फिर भी मैं पार्टी को वोट देना जारी रखूंगा।

गठबंधन टूटने के तुरंत बाद, बीजेपी पट्टाली मक्कल काची (पीएमके) और टीटीवी दिनाकरन और ओ पनीरसेल्वम जैसे एआईएडीएमके विद्रोहियों के साथ गठबंधन बनाने में कामयाब रही, जिससे राज्य के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में पार्टी को मदद मिल सकती है, उसे पश्चिमी तमिलनाडु में पैठ बनाने की उम्मीद है। ऐसा इसलिए क्योंकि अन्नामलाई स्वयं इसी क्षेत्र से हैं।

इस बीच, एआईएडीएमके पश्चिमी क्षेत्र को बरकरार रखना चाहती है, जो मुख्य रूप से उसका गढ़ रहा है। 2021 के विधानसभा चुनाव में एआईएडीएमके गठबंधन को 75 सीटें हासिल हुईं। इसमें से 40 सीटें अकेले पश्चिमी क्षेत्र की थीं। 2021 में बीजेपी ने जो चार सीटें जीतीं, उनमें से दो (कोयंबटूर और मोदाक्कुरिची) सीटें पश्चिमी क्षेत्र से थीं।

वेल्लोर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (वीआईटी) में राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर और विश्लेषक डॉ अरुण कुमार जी ने कहा, 'एआईएडीएमके और बीजेपी दोनों ने गौंडर समुदायों के भीतर अपने संबंधों को मजबूत करने की कोशिश की है, इस जनसांख्यिकीय/क्षेत्र के व्यक्तियों को पार्टी और सरकार दोनों में प्रमुख पद सौंपे हैं।'

अरुण कुमार के अनुसार, पारंपरिक मतदाता किस ओर झुकेंगे, यह तय करने में जाति प्रमुख भूमिका निभाती है। मोदी के आने से पहले, उच्च जाति के मतदाता, जो तमिलनाडु में आबादी का 2-3 प्रतिशत हैं, जयललिता को वोट देते थे। यहां तक कि जब वे बीजेपी को पसंद करते थे, तब भी उन्होंने एआईएडीएमके को चुना, क्योंकि उन्हें लगा कि पूर्व की जीत की संभावना कम थी, इसलिए वे इसे सुरक्षित रखना चाहते थे। लेकिन अब, गौंडार समुदाय जैसे उच्च जाति और पिछड़ी जाति के मतदाता बीजेपी की ओर आकर्षित हो गए हैं।

राजनीतिक विश्लेषक और मद्रास विश्वविद्यालय के राजनीति और लोक प्रशासन विभाग के पूर्व प्रमुख रामू मणिवन्नन ने कि 'तमिलनाडु के उत्तरी और पश्चिमी हिस्सों में एआईएडीएमके का पारंपरिक वोट बैंक निश्चित रूप से नहीं बदलेगा। लेकिन दक्षिणी जिलों में जाति संप्रदाय के कारण एक निश्चित बदलाव आएगा। एआईएडीएमके को इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि मुक्कुलाथोर जाति के वोट, और टीटीवी दिनाकरण, शशिकला और ओपीएस के पक्ष में वोट इस बार उनके पास नहीं जाएंगे।'

कोयंबटूर विधायक और बीजेपी महिला विंग की राष्ट्रीय अध्यक्ष वनाथी श्रीनिवासन कहती हैं कि एआईएडीएमके और बीजेपी दोनों का मानना था कि गठबंधन के टूटने से उन पर कोई असर नहीं पड़ेगा। 2016 में, बीजेपी ने कोयंबटूर दक्षिण में अकेले चुनाव लड़ा और 22 प्रतिशत वोट-शेयर प्राप्त किया। 2019 में, एआईएडीएमके के साथ गठबंधन के बावजूद, हम बुरी तरह हार गए। इसलिए, इससे वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता। लोग जानते हैं कि बीजेपी और मोदीजी पिछले 10 वर्षों में उनके लिए क्या काम कर रहे हैं। यही मायने रखता है। एआईएडीएमके के एक नेता ने पूछा, 'बीजेपी का वोट शेयर 3 प्रतिशत से भी कम है. उन्होंने 2021 में केवल हमारी वजह से चार सीटें जीतीं, तो वे हमारे वोट कैसे विभाजित कर सकते हैं?'

इस बीच, जब पूछा गया कि क्या एआईएडीएमके-बीजेपी के बंटवारे से डीएमके को फायदा होगा, तो डीएमके सांसद कनिमोझी ने कहा कि 'अगर बीजेपी ने तमिलनाडु में सीटें जीती तो इसका कारण एआईएडीएमके के साथ गठबंधन था। यह उनकी अपनी योग्यता पर नहीं है। मुझे नहीं लगता कि कोई बदलाव होगा क्योंकि एआईएडीएमके और बीजेपी अलग हो गए हैं।'

राजनीतिक विश्लेषकों ने बताया कि यह बढ़ा-चढ़ा कर बताया जा रहा है कि वोटों में भारी विभाजन होगा। उनका मानना था कि भले ही एआईएडीएमके और बीजेपी के अलग होने के परिणामस्वरूप डीएमके विरोधी वोटों का विभाजन होता है, लेकिन अगर एआईएडीएमके अपने पारंपरिक वोट बैंक को फिर से हासिल कर लेती है तो उसे लंबे समय में अपने लिए फायदा नजर आएगा। अरुण कुमार के अनुसार, एआईएडीएमके अपने मूल वोट बैंक पर निर्भर है, जो लगभग 30 प्रतिशत है, और डीएमके सरकार के खिलाफ 'सत्ता-विरोधी लहर' है जो उसके प्रदर्शन में सहायता करेगी।

(दि क्विंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

मैं या तो महाकाल के आगे झुकता हूं या जनता जनार्दन के सामने

बालाघाट में कहा-धमकी ना दें, मैं डरता नहीं, महाकाल का भक्त हूं

भोपाल। मध्यप्रदेश के बालाघाट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अब तक जो विकास के कार्य किए हैं वो तो फुलझड़ी है। अभी तो विकास के रॉकेट को और भी ऊंचाई पर लेकर जाना है। पीएम मोदी ने कहा कि अभी तो ये ट्रेलर है। अभी भारत को नए मुकाम पर ले जाना है। उन्होंने कहा कि मोदी मौज करने के लिए पैदा नहीं हुआ है। पीएम मोदी ने खुद को भगवान महाकाल का भक्त बताया। उन्होंने कहा कि मोदी या तो महाकाल के सामने झुकता है या फिर जनता जनार्दन के सामने। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बालाघाट में जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने सभा में उमड़ी भीड़ को देखकर कहा- इतनी बड़ी तादाद में माताओं-बहनों का प्यार साफ दिखा रहा है कि 4 जून को मध्यप्रदेश में क्या परिणाम आने वाले हैं। विधानसभा चुनाव में ही आपने कांग्रेस को पूरी तरह साफ कर दिया है। पीएम मोदी ने कहा कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के लोग भाजपा से नहीं लड़ रहे, वो तो आपस में एक-दूसरे से लड़ रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी कहा- कांग्रेस ने अब इंडी गठबंधन बनाकर देश के खिलाफ बिगुल फूंक दिया है। ये आपस में लड़ते हैं लेकिन कहते हैं कि मोदी को रोकने के लिए साथ आए हैं लेकिन असल में उन्हें मोदी को नहीं रोकना है बल्कि उन्हें देश के विकास को रोकना है। मोदी ने कहा- कांग्रेस अभी भी अपनी पुरानी मानसिकता में जकड़ी हुई है। भाजपा जब आदिवासी महिला राष्ट्रपति के लिए आगे बढ़ी, तब कांग्रेस ने उन्हें हराने के लिए पूरी ताकत लगा दी। कांग्रेस आजादी का श्रेय किसी आदिवासी को नहीं, अपने शाही परिवार को देना चाहती है। हमारी सरकार ने टंट्या मामा जैसे कई आदिवासी क्रांतिकारियों को सम्मान दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा- जो लोग अपनी तिजोरियां भरने राजनीति में आए हैं वे मोदी को धमकी न दें, मोदी तो अपनी कमाई भी देश सेवा में लगा देने की आदत रखता है। मोदी महाकाल का भक्त है, मोदी झुकता है तो या तो जनता जनार्दन के सामने या महाकाल के सामने। मोदी ने अब तक जो काम किए हैं, वो तो फूलझड़ी है। अभी तो विकास का रॉकेट और ऊंचा ले जाना है। असली दीपावली मननी तो अभी बाकी है। इसके लिए ही मैं आपसे आशीर्वाद लेने आया हूं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बालाघाट में कहा- कांग्रेस ने हमारे आदिवासी भाई-बहनों को जल, जंगल, जमीन के अधिकारों से वंचित रखा था। आज 1 करोड़ से ज्यादा जनजातीय समाज के लोग पेसा कानून का लाभ ले रहे हैं।

हम राम के पुजारी, वो हैं राम के व्यापारी

पीएम मोदी के आरोपों पर जयराम रमेश का जवाब

नईदिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 में बीजेपी द्वारा लगातार कांग्रेस को सनातन विरोधी कहने के आरोपों पर जयराम रमेश ने कांग्रेस पार्टी का बचाव किया है। पीएम मोदी लगातार चुनावी रैलियों में कांग्रेस पर रामलला प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के लिए निमंत्रण को जानबूझकर अस्वीकार करने का आरोप लगा रहे हैं। अब इस पूरे प्रकरण पर पार्टी का बचाव करते हुए जयरमेश ने कहा कि वह कार्यक्रम पूरी तरह से राजनीतिक था। इसलिए हमने निमंत्रण को सम्मानपूर्वक अस्वीकार किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि हम राम के पुजारी हैं और बीजेपी के लोग राम के व्यापारी हैं। दिए इंटरव्यू में कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने बीजेपी पर धर्म का राजनीतिकरण करने का आरोप लगाते हुए कहा कि यह धर्म और राजनीति को भी नीचे स्तर ला गया है। बीजेपी पर हमला करते हुए उन्होंने कहा कि वे

राम के व्यापारी हैं, जबकि कांग्रेस नेता राम के पुजारी हैं। जयराम रमेश ने कहा कि 22 जनवरी को अयोध्या के राम मंदिर में किया गया जश्न पूरी तरह से राजनीतिक था। यह सिर्फ एक राजनीतिक दल के व्यक्ति की इच्छा और जरूरतों को पूरा करने के लिए आयोजित किया गया। हम राम के उपासक हैं और वे (भाजपा) राम के व्यापारी हैं। जयराम रमेश ने कहा कि मेरे नाम जयराम रमेश में भी राम है। एक नहीं दो बार। कोई भी हमें राम विरोधी नहीं कह सकता। जयराम रमेश का यह बयान पीएम मोदी की छत्तीसगढ़ में चुनावी रैली के दौरान आरोपों के जवाब में आया है।

राहुल गांधी ने चखा महुआ, पूछा-कितना पैसा मिलता है

एमपी के उमरिया में आदिवासी महिलाओं को देखकर गाड़ी रुकवाई, कई सवाल किए

भोपाल। कांग्रेस के स्टार प्रचारक और पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने मंगलवार को एमपी में महुआ बीने। वे शहडोल से उमरिया जा रहे थे। रास्ते में आदिवासी महिलाओं को महुआ बीनते देख काफिला रुकवाया और उनसे बातचीत की। राहुल ने कुछ महुए बीने और चखकर भी देखा। राहुल सोमवार को चुनावी सभा करने शहडोल आए थे।

उन्होंने इन सभाओं में आदिवासियों पर फोकस किया। लौटते वक्त फ्यूल की कमी के कारण उनका हेलिकॉप्टर उड़ नहीं सका। राहुल ने शहडोल के एक निजी होटल में रात गुजारी। बांधवगढ़ से लगे जंगल में एक ढाबे पर डिनर किया। राहुल ने इंस्टा पर शहडोल दौरे का अपना वीडियो शेयर किया, जिसमें लिखा- आज की शाम शहडोल के नाम। उनके साथ प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार भी थे। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने बताया कि हेलिकॉप्टर के लिए भोपाल से फ्यूल मंगवाया गया, लेकिन खराब मौसम के कारण फ्यूल समय पर नहीं पहुंच पाया था। राहुल मंगलवार सुबह चार्टर्ड प्लेन से दिल्ली के लिए रवाना हुए। राहुल गांधी ने नमस्कार कर महिलाओं से पूछा, 'यह फसल आप जमीन से उठाते हो?' इसके बाद महुआ चखकर बोले- नॉट बैड। महिलाओं ने जवाब दिया, 'सुबह 3 बजे से बैठे हैं, तब जाकर इतना सा मिला है।' इस पर राहुल ने पूछा- एक दिन में कितना बीन लेते हैं? महिला ने बताया- दो चुकनी (टोकरी)। दूसरी महिला ने बताया कि हम इसको सुखाकर मार्केट में बेचते हैं। राहुल ने पूछा कि कितना पैसा बनता है तो महिला ने कहा, 'दो चुकनी बेचने पर दो-तीन सौ रुपए बन जाते हैं।'

बसपा के प्रत्याशी अशोक मोतीराम भलावी का दिल का दौरा पड़ने से निधन

बैतूल-हरदा संसदीय सीट का लोकसभा चुनाव आगे बढ़ा

संजय द्विवेदी, बैतूल। पूर्व जनपद सदस्य एवं लोकसभा चुनाव 2024 में बसपा के प्रत्याशी अशोक पिता मोतीराम भलावी निवासी सोहागपुर सापना विकासखंड बैतूल का अचानक दिल का दौरा पड़ने से मंगलवार 9 अप्रैल की दोपहर में एक निजी चिकित्सालय में आकस्मिक निधन हो गया है। उन्हें सीने में दर्द की शिकायत होन पर अस्पताल में भर्ती किया गया था। श्री भलावी लंबे समय से समाज और राष्ट्र सेवा एवं राजनीति में सक्रिय थे। वे वर्तमान में बैतूल हरदा हरसूद लोकसभा क्षेत्र से बसपा के प्रत्याशी के रूप में चुनावी समर में थे। इसके पहले भी वे बसपा की सीट पर चुनाव लड़े थे। श्री भलावी के निधन से बसपा सहित अन्य राजनीतिक दलों में भी शोक व्याप्त है। श्री भलावी का दाह

संस्कार बुधवार 10 अप्रैल 2024 को सोहागपुर में सुबह 11 बजे किया जावेगा। उनके अचानक निधन पर जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों ने शोक व्यक्त कर दिवंगत आत्मा की शांति की कामना की है।

बैतूल लोकसभा सीट का चुनाव आगे बढ़ा - जिला निर्वाचन अधिकारी एवं कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने बताया कि बसपा के प्रत्याशी अशोक पिता मोतीराम भलावी के निधन की पुष्टि हुई है और इसकी सूचना चुनाव आयोग को लिखित में दे दी गई है तथा आगामी 26 अप्रैल को होने वाला निर्वाचन स्थगित कर दिया गया है। अब आगे चुनाव आयोग से जो भी दिशा निर्देश प्राप्त होंगे, उसके आधार पर ही आगे बैतूल लोकसभा सीट की नामांकन एवं निर्वाचन की प्रक्रिया निर्धारित होगी।

राम नवमी पर अयोध्या में होने जा रहा 'चमत्कार'

● रामलला का होगा सूर्य तिलक, सीधे पड़ेगी किरण ● तीसरी मंजिल पर लगाए उपकरणों का ट्रायल पूरा

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या स्थित राम मंदिर 17 अप्रैल को राम नवमी के अवसर पर एक दुर्लभ खगोलीय घटना का गवाह बनने जा रहा है। इस दिन मंदिर आने वाले भक्तों को भी एक दुर्लभ वार्षिक कार्यक्रम का गवाह बनने का मौका मिलेगा। दरअसल इस दिन सूरज की किरण भगवान राम की मूर्ति पर पड़ेगी और यह नई राम लला की मूर्ति के माथे पर एक 'दिव्य' तिलक लगाएगी। इसे 'सूर्य तिलक' कहा जा रहा है। साथ ही इसे विज्ञान, इंजीनियरिंग और आध्यात्मिकता का मिश्रण बताया जा रहा है। मंदिर ट्रस्ट के अधिकारियों और इस मकैनिज्म को डिजाइन करने वाले वैज्ञानिकों ने कहा कि यह घटना लेंस और मिरर की खास डिजाइन के माध्यम से घटित होगी। खास बात ये है कि यह चमत्कार केवल राम नवमी के दिन ही होगा। यानी भगवान राम की प्रतिमा पर सूर्य किरण केवल राम नवमी के दिन ही पड़ेगी। इस दिन भगवान काम का जन्मदिवस होता है। इसी साल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद डॉ सुधांशु त्रिवेदी ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान 'सूर्य तिलक' को लेकर विस्तार से बताया था। उन्होंने कहा कि राम मंदिर में एक वैज्ञानिक तथ्य है कि राम मंदिर में भगवान की प्रतिमा पर राम नवमी को सूर्य की किरण सीधे पड़ेगी। यानी राम नवमी को भगवान का सूर्य तिलक होगा। इसके लिए इन्स्टीट्यूट आफ एस्ट्रोफिजिक्स, बेंगलुरु ने गहन खगोलीय अध्ययन और आंकलन किया। रुड़की के सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट ने इमारत के बारे में गहन शोध किया और एक कंपनी ने वह अवतल लैंस तैयार किया जिसमें से हो कर सूर्यकिरण भगवान के माथे पर पड़ेंगी। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि कई अन्य प्राचीन मंदिरों में भी इसी तरह का चमत्कार देखने को मिलता है। उन्होंने कहा कि आंध्रप्रदेश के वेद नारायण मंदिर, कोल्हापुर में महालक्ष्मी मंदिर, कोणार्क मंदिर, कर्नाटक के श्रृंगेरी के मंदिर में विज्ञान का करिश्मा है।

● 100 एलईडी स्क्रीन से अयोध्या में होगा प्रसारण

भोपाल का तापमान

अधिकतम 40 °c

न्यूनतम 29°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार, 10 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

द्वितीय

ब्रह्मचारिणी

नव दुर्गा के दूसरे रूप का नाम है मां ब्रह्मचारिणी। ब्रह्मचारिणी का अर्थ है वह जो असीम, अनन्त में विद्यमान, गतिमान है। एक ऊर्जा जो न तो जड़ न ही निष्क्रिय है, किन्तु वह जो अनन्त में विचरण करती है। यह बात समझना अति महत्वपूर्ण है – एक गतिमान होना, दूसरा विद्यमान होना।

एनसीईआरटी की नकली किताबें बेचना पड़ेगा भारी !

- पकड़े जाने पर होगी कानूनी कार्रवाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने नकली स्कूली पाठ्यपुस्तकों को लेकर सोमवार को चेतावनी जारी कर कहा कि इनमें तथ्यात्मक रूप से गलत सामग्री होने की आशंका है। एनसीईआरटी ने अपनी पाठ्यपुस्तकों की अनधिकृत छपाई और उनकी व्यावसायिक बिक्री के प्रति लोगों को आगाह किया और उसकी शैक्षिक सामग्रियों के कॉपीराइट के उल्लंघन को लेकर कानूनी कार्रवाई करने की चेतावनी दी। परिषद के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, कुछ प्रकाशक एनसीईआरटी से अनुमति प्राप्त किए बिना इसकी वेबसाइट पर उपलब्ध एनसीईआरटी की स्कूली पाठ्यपुस्तकों को अपने नाम से छाप रहे हैं। उन्होंने कहा, अगर कोई व्यक्ति व्यावसायिक बिक्री के लिए एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों को उपयोग करता हुआ पाया जाता है तो तो कार्रवाई होगी।

महाराष्ट्र में इंडिया गठबंधन में सीट शेयरिंग तय

- शिवसेना 21, कांग्रेस 17 और एनसीपी 10 सीट

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र में विपक्षी गठबंधन महा विकास अघाड़ी आगामी लोकसभा चुनावों के लिए सीट-बंटवारे के समझौते पर पहुंच गया है। राज्य में उद्धव ठाकरे के गुट वाली शिवसेना 21 सीटों पर चुनाव लड़ेगी, जबकि कांग्रेस 17 सीटों पर लड़ेगी और एनसीपी के शरद पवार गुट को 10 सीटें मिलेंगी। आज मुंबई के शिवालयम में महाविकास अघाड़ी की एक साझा प्रेस कॉन्फ्रेंस हुई। इसमें एनसीपी चीफ शरद पवार, उद्धव ठाकरे, बालासाहेब थोराट, पृथ्वीराज चव्हाण, नाना पटोले, जयंत पाटिल, संजय राउत और महाविकास अघाड़ी के सभी प्रमुख नेता मौजूद थे।

बड़ी खुशखबरी!

अबकी झूम-झूम के बरसेंगे बदरा

- स्काईमेट ने कहा-शुरुआत में अलनीनो का दिखाई दे सकता है असर
- दूसरे फेज में हो जाएगी भरपाई, देश भर के किसानों की बल्ले-बल्ले

नई दिल्ली (एजेंसी)। मौसम का पूर्वानुमान लगाने वाली एजेंसी स्काईमेट ने मंगलवार को मानसून का अनुमान जाहिर किया। स्काईमेट के मुताबिक, 2024 में मानसून सामान्य रहेगा। एजेंसी ने मानसून सीजन के बहुत अच्छे रहने की संभावना जाहिर की है। जून से सितंबर तक चलने वाले 4 महीने के मानसून सीजन के

सामान्य रहेगा मानसून

लिए औसत 868.6 मिमी है। स्काईमेट के मैनेजिंग डायरेक्टर जतिन सिंह ने कहा कि शुरुआत में अल-नीनो का असर रहेगा, पर दूसरे हाफ में इसकी भरपाई हो जाएगी। इस साल स्काईमेट ने दूसरी बार मानसून का पूर्वानुमान जारी किया है। इससे पहले 12 जनवरी 2024 को भी स्काई मेट ने मानसून के सामान्य रहने की संभावना जाहिर की थी। स्काईमेट के मुताबिक, अलनीनो काफी तेजी से ला नीना में बदल रहा है। यह अच्छा

संकेत है। अलनीनो का ला नीना में बदलना अच्छे मानसून का कारण बनता रहा है। हालांकि, मानसून की शुरुआत में अल नीनो के बचे कुचे असर के कारण मानसून पर थोड़ा असर पड़ सकता है, लेकिन दूसरे चरण में मानसून भरपाई कर लेगा। अल नीना से ला नीना में परिवर्तन के चलते सीजन की शुरुआत में देरी हो सकती है। सीजन के दौरान अलग-अलग और असमान बारिश की संभावना है। यानी कहीं ज्यादा और कहीं कम बारिश हो सकती है। अल नीनो एक वेदर ट्रेंड है, जो हर कुछ साल में एक बार होता है। इसमें ईस्ट पैसिफिक ओशन में पानी की ऊपरी परत गर्म हो जाती है। आईएमडी ने बताया कि इस क्षेत्र में फरवरी में औसत तापमान 0.44 डिग्री से बढ़कर जून के मध्य तक 0.9 डिग्री पर आ गया था।

'शराब' कांड में डूबे केजरीवाल

नहीं मिली जमानत

- हाईकोर्ट ने दिया झटका, कहा-खुद सीएम ने रची थी साजिश
- कहा-केजरीवाल अपराध की आय के इस्तेमाल में रहे शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाई कोर्ट ने मंगलवार को शराब घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय

(ईडी) द्वारा की गई मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ दायर याचिका को खारिज कर दिया। इस दौरान, कोर्ट ने सीएम केजरीवाल को लेकर अहम टिप्पणी की। कोर्ट ने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय द्वारा एकत्रित किए गए दस्तावेजों से पता चलता है कि अरविंद केजरीवाल ने साजिश रची थी और अपराध की आय के इस्तेमाल व छिपाने में एक्टिव रूप से शामिल भी थे। वह निजी तौर पर आम आदमी पार्टी के संयोजक के तौर पर भी इसमें शामिल थे। जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा ने केजरीवाल की याचिका पर फैसला सुनाते हुए कहा कि किसी को कोई विशेषाधिकार नहीं दिया जा सकता है। जांच में पूछताछ करने से सीएम को छूट नहीं मिल सकती है। हाई कोर्ट ने कहा कि एमएस रेड्डी और शरत रेड्डी ने स्वतंत्र इच्छा से अपना बयान दिया है। यह अदालत ट्रायल कोर्ट की जगह नहीं ले सकती और मिनी ट्रायल नहीं कर सकती है। कोर्ट ने कहा,ईडी के पास पर्याप्त सामग्री थी, जिसके कारण उन्हें आरोपियों को गिरफ्तार करना पड़ा।

एके एंटनी ने अपने बेटे के खिलाफ ही खोला मोर्चा

- एके एंटनी ने की एंटो एंटनी को जिताने की अपील

तिरुवनंतपुरम (एजेंसी)। 2024 लोकसभा चुनावों में जहां तमाम परिवारों के बीच सियासी तौर पर लड़ाई हो रही है तो वहीं केरल में देश के पूर्व रक्षा मंत्री ए के एंटनी ने अपने बेटे अनिल एंटनी के चुनाव हारने की कामना की है। कांग्रेस के दिग्गज नेता ए के एंटनी ने अपने बेटे के खिलाफ जबरदस्त मोर्चा खोल दिया है। एंटनी ने कहा है कि मेरे बेटे को चुनाव में हराना जरूरी है। अनिल एंटनी राज्य में बीजेपी के टिकट पर केरल की पथानामथिट्टा लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। उन्होंने कुछ समय पहले बीजेपी का दामन थाम लिया था। पिता ए के एंटनी ने अब अपने बेटे के ही हार की दुआ मांगी है। एंटनी अपने बेटे के खिलाफ प्रचार कर रहे हैं। एके एंटनी ने कहा है कि कांग्रेस के खिलाफ लड़ने वाली पार्टी को हराना है।

पिपलानी में सबसे ऊंची 31 फीट ऊंची गुड़ी लगी

भोपाल। हिंदू नव वर्ष विक्रम संवत् 2081 को श्री गणेश मंदिर समिति एवं मराठी संस्कृतिक मंडल द्वारा भारत को विश्व गुरु बनाने एवं विश्व शांति का संकेत देने के लिए मंदिर के प्रवेश द्वार के पास स्थापित 31 फीट ऊंचे स्तंभ के ऊपर गुड़ी लगाई गई। महाराष्ट्रीयन संस्कृति में गुड़ी की स्थापना गुड़ी पड़वा के दिन की जाती है। यह स्थैर्य, सौभाग्य, वैभव, मांगल्य, आरोग्य तथा यश का प्रतीक माना जाता है। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में वार्ड क्रमांक 70 के पार्षद अशोक वाणी के साथ श्री गणेश मंदिर समिति के सदस्य व मराठी समाज के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

इंडी गठबंधन को राम मंदिर से कल भी नफरत थी, आज भी है

पहली बार पीलीभीत में पीएम मोदी की रैली, नहीं आए वरुण गांधी

पीलीभीत (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को पहली बार पीएम के पीलीभीत में रैली को संबोधित किया। इस दौरान पीएम ने कहा, 'इंडी गठबंधन को राम मंदिर से कल भी नफरत थी, आज भी है। कांग्रेस ने लाख कोशिश की, लेकिन जब देश की जनता ने पाई-पाई देकर इतना भव्य मंदिर बना दिया। जब मंदिर वालों ने आपके सारे गुनाह माफ करके प्राण प्रतिष्ठा में आमंत्रित किया, मगर आपने आमंत्रण को ठुकरा कर भगवान राम का अपमान किया, जो नेता प्राण प्रतिष्ठा में गए, उन्हें 6 साल के लिए पार्टी से निकाल दिया। यह कैसी पार्टी है। यह पाप करने वाले को कभी भूलिएगा मत।' रैली में पीलीभीत से मौजूदा सांसद वरुण गांधी नहीं पहुंचे। भाजपा ने वरुण का टिकट काटकर यहां से यूपी सरकार में मंत्री जितिन प्रसाद को मैदान में उतारा है। प्रधानमंत्री मोदी ने 10 दिन में चौथी बार यूपी में रैली की। इससे पहले पीएम ने 31 मार्च को मेरठ में और 6 अप्रैल को सहारनपुर में रैली की थी। 6 अप्रैल को ही गाजियाबाद में रोड शो भी किया था।

गहलोत सरकार में डीजी रहे बीएल सोनी बीजेपी में शामिल

जयपुर (एजेंसी)। भारतीय पुलिस सेवा के सेवानिवृत्त अधिकारी भगवान लाल सोनी ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ले ली है। मंगलवार 9 अप्रैल को नव संवत्सर के अवसर पर जयपुर स्थित पार्टी के प्रदेश कार्यालय में जॉइनिंग कमेटी के प्रदेश संयोजक अरुण चतुर्वेदी ने भाजपा की सदस्यता दिलाई। 31 दिसंबर 2022 को वे पुलिस सेवा से सेवानिवृत्त हुए थे। तब से वे सामाजिक कार्यों से जुड़े हुए थे। पिछले दिनों उन्होंने राजनैतिक पार्टी जॉइन करके सेवा का मन बनाया। वर्तमान परिदृश्य में सबसे बेहतर कार्य करने वाली पार्टी उन्हें बीजेपी लगी और फिर उन्होंने पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर ली। उन्होंने भाजपा ज्वाइन करते ही पूर्व सीएम अशोक गहलोत पर आरोप लगाया कि उन्होंने संदिग्ध छवि के लोगों को भर्तियों का जिम्मा दिया था। गहलोत सरकार के कार्यकाल में बिचौलिए भी हावी हो गए थे। वहीं दूसरी तरफ युवाओं के भविष्य के साथ कुठाराघात किया गया था। 1988 बैच के आईपीएस अफसर रहे बीएल सोनी ने 35 साल तक पुलिस में सेवाएं दी। वे पुलिस महकमे के सबसे सुलझे हुए अफसरों में गिने जाते हैं।

अकाली दल अध्यक्ष सुखबीर बादल की तबीयत बिगड़ी

- पंजाब बचाओ यात्रा के दौरान गर्मी से हुए बीमार, बिक्रम मजीठिया संभालेंगे मोर्चा

अमृतसर (एजेंसी)। शिरोमणि अकाली दल अध्यक्ष सुखबीर बादल की तबीयत बिगड़ गई है। बीते कई दिनों से बढ़ रही गर्मी के बीच सुखबीर बादल पंजाब बचाओ यात्रा में डटे हुए थे और लोगों से मिल रहे थे। जिसके बाद उनकी सेहत में हलकी गिरावट देखने को मिली। मिली जानकारी के अनुसार अब सीनियर अकाली नेता बिक्रम मजीठिया

पंजाब बचाओ यात्रा को संभालेंगे। पंजाब बचाओ यात्रा आज लुधियाना के पायल से रवाना होनी थी। लेकिन अब बिक्रम मजीठिया इस यात्रा को लीड करने वाले हैं। अकाली दल के एक सीनियर नेता से मिली जानकारी के अनुसार सुखबीर बादल को डायरिया हो गया है। जिसके बाद उनका यात्रा में शामिल होना मुश्किल लग रहा है। सुखबीर बादल के पंजाब बचाओ यात्रा के दौरान तबीयत बिगड़ने के बाद विरोधी दल एक बार फिर अकाली दल को घेरने की तैयारी में हैं। बीते दिन ही सीएम भगवंत मान अपनी रैलियों व भाषण में सुखबीर बादल व गर्मी को लेकर तंज कसते रहे हैं।

बंगाल पुलिस ने एनआईए के 2 अधिकारियों को भेजा समन

खुद पर एफआईआर के खिलाफ हाईकोर्ट पहुंची जांच एजेंसी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में राष्ट्रीय जांच एजेंसी यानी एनआईए की टीम पर हुए हमले का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। बंगाल पुलिस ने एनआईए टीम के दो अधिकारियों को समन जारी किया है। भूपतिनगर पुलिस स्टेशन में शिकायत देने वाले अधिकारी और कथित हमले में घायल एक अन्य अधिकारी को समन भेजा गया है। हमले में घायल हुए अधिकारी को बतौर गवाह बुलाया गया है और उन्हें अपने साथ मेडिकल सर्टिफिकेट भी लाने के लिए कहा गया है। वहीं, बंगाल पुलिस की एफआईआर के खिलाफ राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। बंगाल पुलिस ने अधिकारियों के कहा कि वह हमले में क्षतिग्रस्त हुई कार को भी अपने साथ लेकर आएं। एनआईए टीम पर हुए हमले के संबंध में उनके बयान जांच अधिकारी दर्ज करेंगे।

इजरायल ने पहली बार तैनात किया सी-डोम सिस्टम

इस प्रणाली का पहला उपयोग 2011 में किया गया था

तेल अवीव (एजेंसी)। इजरायल ने पहली बार सी-डोम डिफेंस सिस्टम की तैनाती की है। इजरायल की ओर से मंगलवार को इसकी जानकारी देते हुए कहा गया कि पहली बार दक्षिणी शहर इलियट के पास सी-डोम तैनात किया गया है। इजरायल ने अपने हवाई क्षेत्र में प्रवेश करने वाले संदिग्ध टारगेट को रोकने के लिए ये रक्षा प्रणाली तैनात की है। सी-डोम आयरन डोम वायु रक्षा प्रणाली का एक नौसैनिक संस्करण है। जहाज पर लगी इस रक्षा प्रणाली का इस्तेमाल समुद्र में रॉकेट और मिसाइल हमलों से बचाव करने में किया जाता है। इजरायली सेना के मुताबिक, सार 6-श्रेणी के कार्वेट, जर्मन निर्मित युद्धपोतों पर सी-डोम का इस्तेमाल किया गया है। ये आयरन डोम की तरह ही इंटरसेप्टर का उपयोग करता है। लैंड-बेस्ड आयरन डोम का इस्तेमाल गए रॉकेटों को रोकने के लिए किया जाता है। फिलहाल के समय में हमास-नियंत्रित गाजा पट्टी से दागे गए रॉकेटों को रोकने के लिए इसका उपयोग किया जा

रहा है। सी-डोम समुद्र में रॉकेट और मिसाइल हमलों से बचाने के लिए एक नौसैनिक रक्षा प्रणाली के रूप में कार्य करता है। इजरायली रक्षा बलों (आईडीएफ) ने सोमवार शाम इलियट क्षेत्र में एक अलर्ट की सूचना दी थी। आईडीएफ ने कहा कि एक शत्रु विमान की घुसपैठ के संबंध में इलियट में सायरन बजने के बाद नौसेना बलों ने इजरायली क्षेत्र में एक संदिग्ध हवाई लक्ष्य की पहचान की। इसे सी-डोम नौसैनिक रक्षा प्रणाली की मदद से सफलतापूर्वक रोक दिया गया। ये सी-डोम का पहला ऑपरेशनल इस्तेमाल था। ऑपरेटर राफेल एडवांस्ड डिफेंस सिस्टम्स के अनुसार, सार 6 श्रेणी के कार्वेट, जर्मन निर्मित युद्धपोतों पर स्थापित, सी-डोम आयरन डोम के समान इंटरसेप्टर का उपयोग करता है।

9वीं और 11वीं परीक्षा का खराब परिणाम देने वाले शिक्षकों पर होगी कार्रवाई

शिक्षा विभाग ने थमाया नोटिस

इंदौर। फरवरी-मार्च में आयोजित हुई 9वीं और 11वीं का परीक्षा परिणाम एक अप्रैल को जारी कर दिया गया है। हाल ही में इस परीक्षा परिणाम को लेकर प्रीतमलाल दुआ सभागृह में समीक्षा बैठक आयोजित की गई थी। जिसमें 20 से अधिक स्कूल ऐसे निकले जिनका परीक्षा परिणाम 40 फीसदी से कम आया है। ऐसे स्कूलों के शिक्षकों को जिला शिक्षा अधिकारी ने नोटिस जारी कर जवाब मांगा है।

नोटिस जारी कर मांगा जवाब

इस बार 9वीं का परीक्षा परिणाम 71.34 और 11वीं का बोर्ड परीक्षा परिणाम 85.20 फीसदी आया है। लेकिन 20 स्कूल ऐसे भी रहे, जहां पर परीक्षा परिणाम औसत से भी कम आया है। जिला शिक्षा अधिकारी मंगलेश व्यास ने बताया कि समीक्षा बैठक में औसत से कम परिणाम देने वाले स्कूलों को लेकर चर्चा की गई थी। जिसमें 20 स्कूलों के शिक्षकों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। इन स्कूलों में से अधिकांश जगह गणित और अंग्रेजी विषय में परीक्षार्थियों को कम नंबर मिले है। जवाब मिलने के बाद इन शिक्षकों की ट्रेनिंग आयोजित की जाएगी। ताकि वर्तमान शिक्षा सत्र में परिणाम बेहतर आए।

मध्य प्रदेश बोर्ड 10वीं और 12वीं का मूल्यांकन जारी

व्यास ने बताया कि 10वीं और12वीं बोर्ड परीक्षाओं को मूल्यांकन कार्य भी पूरा हो चुका है। अब एजेंसी द्वारा अंकों की शीट को मुख्यालय भेजा जा रहा है। जहां अंकसूची तैयारी की जाएगी। परीक्षा परिणाम की तारीख तय नहीं है। लेकिन संभवत इसी माह के अंत तक परीक्षा परिणाम आने की संभावना है। बोर्ड परीक्षा परिणाम आने के बाद समीक्षा बैठक आयोजित की जाएगी।

चैत्र नवरात्र व्रत में साबूदाना और आलू के ज्यादा सेवन से बचें, गर्मी में पिएं नारियल पानी

- गर्मी है इसलिए व्रत के दौरान ज्यादा से ज्यादा पानी पिएं
- ज्यादा तला हुआ खाने से बचें। चाय-काफी का ज्यादा सेवन न करें

इंदौर। नवरात्र में नौ दिन के व्रत में केवल फलाहार ही कर रहे हैं, तो साबूदाना खिचड़ी, वड़ा, आलू या सिर्फ मिठाई पर ही निर्भर न रहें। साबूदाना या आलू में स्टार्च अधिक होता है और तेल या घी में इन्हें बनाने से उनमें वसा भी अधिक होता है। इससे ऊर्जा तो मिल जाएगी, लेकिन जरूरी पोषक तत्व नहीं मिल सकेंगे। पोषण और आहार विशेषज्ञ प्रेरणा पवेचा के अनुसार, चैत्र नवरात्र के दौरान अधिकांश महिलाएं और पुरुष व्रत रखते हैं। ऐसे में उन्हें लापरवाही ना बरतते हुए खानपान का भी विशेष तौर पर ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि अभी गर्मी भी अधिक हो रही है। इसके लिए अच्छे स्वास्थ्य के लिए नारियल पानी और फलों के रस का सेवन करना फायदेमंद होता है। इसके साथ ही पानी भी अधिक मात्रा में पीना चाहिए।

चाय-काफी का ज्यादा सेवन न करें: बेहतर होगा ज्यादा तला हुआ खाने से बचें। इसके बजाय मोरथन, फल, राजगीरा की रोटी, दही, छांछ आदि का सेवन करना चाहिए। इसके साथ ही कई लोग व्रत के दौरान बार-बार चाय-काफी का सेवन भी करते हैं। हमें इससे भी बचना चाहिए। चाय-काफी में मौजूद कैफीन पोषक तत्व को नष्ट करता है। यह हमारी सेहत पर असर करता है।

शरीर में न हो पोषक तत्वों की कमी: व्रत करने वाले व्यक्ति को ऐसा भोजन करना चाहिए जो पोषक तत्वों से भरा हो। व्रत करें पर यह ध्यान रखें कि पोषक तत्वों की कमी न होने दें। जिन्हें फील्ड वर्क अधिक करना होता है या जो लोग वर्कआउट पर फोकस करते हैं, वे व्रत के दौरान भी खान-पान पर विशेष ध्यान रखें।

क्रिश्चियन मिशनरी को नहीं मिली धर्मसभा की अनुमति, हाई कोर्ट ने खारिज की याचिका

इंदौर। क्रिश्चियन मिशनरी को 10 अप्रैल को अभय प्रशाल में धर्मसभा आयोजित करने की अनुमति नहीं मिली। संस्था ने यह कहते हुए हाई कोर्ट में याचिका दायर की थी कि आयोजन धार्मिक है और प्रशासन ने पूर्व में इसकी अनुमति दे दी थी, लेकिन बाद में बगैर किसी कारण के इसे वापस ले लिया।आयोजन के लिए तैयारी पूरी कर चुके हैं।

प्रशासन की तरफ से याचिका का विरोध करते हुए बताया गया कि संस्था को 27 शर्तों के साथ अनुमति दी गई थी। वर्तमान में आचार संहिता लागू है। ऐसे आयोजनों से कानून व्यवस्था बिगड़ने की आशंका है। यही वजह है कि प्रशासन ने पूर्व में दी गई अनुमति वापस ले ली है।

हिंदू महासभा ने भी किया था विरोध: हिंदू महासभा ने याचिका में इंटरविनर बनकर अनुमति देने का विरोध किया था। सभी पक्षों को सुनने के बाद कोर्ट ने मिशनरी की याचिका यह कहते हुए निरस्त कर दी कि वह चाहे तो चुनाव के बाद नए सिरे से अनुमति के लिए प्रशासन के समक्ष आवेदन कर सकते हैं।

गर्मी शुरू होते ही इंदौर में गहराने लगा जल संकट

300 से अधिक हुई टैंकर की संख्या

इंदौर। ग्रीष्मकाल शुरू होते ही शहर के कई क्षेत्रों में जल संकट गहराने लगा है। पानी के लिए भटकते लोगों की तस्वीर आम होने लगी है। नगर निगम का यह दावा कि शहर में पर्याप्त जल वितरण किया जा रहा है झूठा नजर आने लगा है। नगर निगम टैंकरों के माध्यम से पानी की सप्लाई का दावा भी कर रहा है। यह व्यवस्था कितनी कारगर है यह तो समय ही बताएगा लेकिन फिलहाल नगर निगम द्वारा संचालित टैंकरों की संख्या 300 के पार पहुंच गई है। इनमें से सिर्फ 87 टैंकर ही नगर निगम के हैं। शेष टैंकर नगर निगम किराए पर लेता है। इसके एवज में एक मोटी रकम हर वर्ष खर्च की जा रही है। हर वर्ष गर्मी शुरू होते ही शहर में जल संकट गहराने लगता है। अमृत 2 प्रोजेक्ट के तहत पूरे शहर में पेयजल वितरण की लाइन बिछाई जा रही है। नई टंकियों का निर्माण भी किया गया है। निगम जल्द ही नर्मदा का चौथा चरण लाने का दावा भी कर रहा है। हालांकि ये सारे दावे और प्रयास भविष्य के गर्भ में हैं।

कई क्षेत्रों से मिल रही शिकायतें

फिलहाल स्थिति यह है कि इंदौर में तालाबों का जलस्तर कम होने लगा है। नगर निगम वर्षों से शहर में दो दिन में एक बार जल वितरण कर रहा है। कई क्षेत्रों से कम दबाव से पानी सप्लाई की शिकायतें भी मिलने लगी है। नर्मदा प्रोजेक्ट इंचार्ज संजीव श्रीवास्तव के मुताबिक शहर में जिन क्षेत्रों में जल संकट की समस्या सामने आ रही है वहां टैंकरों के माध्यम से जल वितरण किया जा रहा है। फिलहाल टैंकरों की संख्या 300 के आसपास है। जरूरत पड़ने पर टैंकरों की संख्या बढ़ाई जाएगी।

पैसा तो मिल गया, लेकिन नगर निगम ने अब तक शुरू नहीं किया सड़क सुधार कार्य

इंदौर। शहर की बदहाल सड़कों के सुधार और नई सड़कों के निर्माण के लिए राज्य शासन ने इंदौर नगर निगम को पैसा तो आवंटित कर दिया लेकिन सड़कों के सुधार और नवनिर्माण का काम कब शुरू होगा यह किसी को पता नहीं। ऐसे में नागरिक बदहाल सड़कों से गुजरने को मजबूर हो रहे हैं। इधर नगर निगम के अधिकारियों की मानें तो आचार संहिता के चलते प्रक्रिया अटकी हुई है। इसके चार जून के बाद ही शुरू होने के आसार हैं। राज्य सरकार ने हाल ही में इंदौर की बदहाल सड़कों के लिए करीब 650 करोड़ रुपये की राशि जारी की है। इनमें मास्टर प्लान की अधूरी पड़ी सड़कों का निर्माण भी पूरा करना है और शहर की बदहाल सड़कों की सूरत भी सुधारना है। पैसा जारी होने के बाद उम्मीद जताई जा रही है कि तुरंत ही काम शुरू हो जाएगा, लेकिन आचार संहिता लागू होने की वजह से ऐसा नहीं हो सका। राज्य सरकार से मिले पैसे से एमआर 5 सहित कई सड़कों के अधूरे काम पूरे किए जाना है। ये सड़कें वर्षों से अधूरी पड़ी है। एमआर 5 का काम तो एक दशक पहले शुरू हुआ था जो अब तक पूरा नहीं हो सका।

पेचवर्क भी सुस्त पड़ा

आचार संहिता लागू होने से कुछ दिन पहले ही नगर निगम ने सड़कों का पेचवर्क शुरू किया था। इससे नागरिकों को धूल भरी सड़कों से मामूली राहत मिलने भी लगी थी, लेकिन फिलहाल पेचवर्क भी बंद पड़ा है। बताया जा रहा है कि ठेकेदारों को भुगतान नहीं होने की वजह से काम अटका हुआ है। सिर्फ सड़कें ही नहीं शहर में कई प्रोजेक्ट है जो नियमित भुगतान नहीं होने की वजह से अटके पड़े हैं। कुछ दिन पहले तक नगर निगम में कर्मचारियों और अधिकारियों की तनख्वाह भी माह के दूसरे और तीसरे सप्ताह में जारी हो रही थी।

इंदौर में पूर्व सरपंच की बेटी से छेड़छाड़, रास्ता रोककर बोला- उठा ले जाउंगा, फिर हुआ फरार

इंदौर। इंदौर के बाणगंगा में पूर्व सरपंच की बेटी के साथ रास्ता रोककर धमकाने और छेड़छाड़ करने का मामला सामने आया है। एक दिन पहले आरोपी ने पीड़िता को कॉल किया और मिलने की जिद की। पीड़िता ने इनकार किया तो आरोपी ने रास्ते में रोककर उठा ले जाने की धमकी दी। पुलिस ने मामले में आरोपी को तलाश रही है। आरोपी पीड़िता को एक साल से परेशान कर रहा था। पीड़िता इलाके के ही एक पूर्व सरपंच की बेटी है। बाणगंगा पुलिस के मुताबिक पीड़िता ने बताया कि बदमाश एक साल से परेशान कर रहा है। वह तीन-चार दिन से बाइक से पीछा कर रहा है। पिता ने उसे समझाइश दी लेकिन वह नहीं माना। पीड़िता ने शिकायत में बताया कि वह सोमवार को राजवाड़ा से घर लौट रही थी। तब जीतू ने मोबाइल पर कॉल कर कहा कि अभी अर्जेंट में मिलकर बात करना है। इस पर पीड़िता ने कहा कि मैं रास्ते में नहीं मिलूंगी। घर आ जाओ। लेकिन कुछ देर बाद युवक युवती के पास रास्ते में ही पहुंच गया। और उसका हाथ पकड़कर कहने लगा कि मैं तुझे उठाकर ले जाउंगा। इसी दौरान पीड़िता शोर मचाने लगी। कुछ ही देर में वहां मदद के लिये परिचित पहुंचे तब जीतू उन्हें देखकर भाग गया। यह बात पीड़िता ने घर पहुंचकर परिजनों को बताई और फिर पुलिस से शिकायत की। पुलिस अब युवक की तलाश कर रही है।

उपभोक्ता फोरम ने रेलवे पर लगाया 13 लाख का जुर्माना

रिजर्वेशन के बाद भी जगह नहीं मिली, रेल मंत्री को ट्वीट करने पर भी नहीं हुआ समाधान

इंदौर। पांच साल पहले इंदौर से 256 यात्रियों ने शिखरजी जाने के लिए रिजर्वेशन कराया। जब यात्री स्टेशन पहुंचे तो पता चला कि वहां अन्य लोगों कब्जा कर रखा है। इस पर इन यात्रियों की फजीहत हो गई। रेलवे के अधिकारियों, रेल मंत्री से शिकायत की तो भी ध्यान नहीं दिया गया। फिर पीड़ित यात्रियों ने इंदौर में उपभोक्ता फोरम की शरण ली। फोरम ने रेलवे की गलती मानते हुए प्रति यात्री 5 हजार रु. जुर्माना सहित 13 लाख रु. देने का आदेश दिया है। मामला 2019 का है। जैन समाज के 256 लोगों ने शिप्रा एक्सप्रेस से शिखरजी जाने के लिए इंदौर से पार्श्वनाथ तक के लिए रिजर्वेशन कराया था। जब ये यात्री स्टेशन पहुंचे तो पता चला कि इनकी सीटों पर पहले से ही अन्य लोगों का कब्जा है। इस पर उन्होंने रेलवे को शिकायत तो उनकी समस्या नहीं सुनी गई। इस दौरान ट्रेन में टीटी भी नहीं था। इन यात्रियों पूरी 26 घंटे की यात्रा में काफी परेशानियां झेलीं। सफर के दौरान यात्रियों ने इंदौर, रतलाम सहित रास्तेभर के रेलवे स्टेशन पर शिकायत की। अधिकारियों को बताया कि उनकी सीटों पर बिहार, उप्र, झारखण्ड आदि के युवकों ने कब्जा किया है जबकि हमारा रिजर्वेशन है। इसके बावजूद रेलवे ने समस्या हल नहीं की।

पीड़ित यात्रियों ने रेल मंत्री को ट्वीट किया। इसके साथ ही रेल अधिकारियों को फिर कई बार शिकायतें की लेकिन गंभीरता से नहीं लिया। इस पर पीड़ितों ने एडवोकेट रोहित जैन के माध्यम से 2020 में इंदौर कोर्ट में रेलवे के खिलाफ दावा लगाया। एडवोकेट जैन के मुताबिक फोरम ने 28 मार्च को रेलवे को दोषी मानते हुए प्रति यात्री 5 हजार रु. हर्जाना और 10 हजार रु. परिवाद के खर्च सहित 13 लाख रु. हर्जाना देने का आदेश दिया है।

इंदौर में भड़के हिंदूवादी संगठन, नशे और अपराध के खिलाफ थाना घेरा, फोर्स बुलाना पड़ी

इंदौर। इंदौर में तेजी से बढ़ रहे नशे के कारोबार और अपराधों के खिलाफ हिंदूवादी संगठन भड़क गए। मंगलवार को हिंदूवादी नेता-कार्यकर्ता परदेशीपुरा थाना पहुंचे और जमकर नारेबाजी की। इनका कहना है कि शहर में तेजी से अपराध बढ़ रहे हैं। नशे का धंधा भी हर जगह पनप रहा है। पुलिस, प्रशासन और सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी है। परदेशीपुरा थाने पर बजरंग दल के जिला प्रचार प्रमुख अन्नू गहलोत के साथ बड़ी संख्या में शहरवासी पहुंचे। सभी हाथों में बैनर और पोस्टर लेकर पहुंचे। अन्नू ने कहा कि हम लोग यहां पर तेजी से बढ़ रहे अपराध और नशे के कारोबार के विरोध में आए हैं। रहवासियों ने कहा कि शहर में खुलेआम चाकूबाजी हो रही है लेकिन पुलिस द्वारा कार्रवाई नहीं की जा रही। दो दिन पहले रात में राजा और उसके दो साथियों पर बदमाशों ने चाकू से हमला कर दिया। इलाके में खुलेआम नशा बिक रहा है। छेड़छाड़ की वारदातें भी लगातार बढ़ती जा रही है। पुलिस ध्यान ही नहीं दे रही है।

इंदौर के राजवाड़ा पर दिया सूर्य को अर्घ्य, कई संत भी हुए शामिल

इंदौर के राजवाड़ा पर गुड़ी पड़वा पर्व के चलते सूर्य को अर्घ्य दिया गया, जिसमें कई साधु-संत भी शामिल हुए

इंदौर। गुड़ी पड़वा पर्व के चलते इंदौर के राजवाड़ा पर अल सुबह सूरज को अर्घ्य दिया गया। इस अवसर पर मराठी समाज के कई लोग शामिल हुए। साथ ही मध्य प्रदेश के कैबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और कई संत भी इस आयोजन में शामिल हुए।

गुड़ी बांधी गई

वहीं इस दौरान राजवाड़ा पर गुड़ी बांधने की परंपरा भी निभाई गई। इतिहास के पन्ने खंगालें तो पता चलता है कि होलकर राजवंश द्वारा तीन जगह मल्हारी मार्तंड मंदिर, दौलत की गादी और खासी की गादी पर गुड़ी बांधी जाती थी। होलकर राज परिवार के निवास पर नवध्वज फहराया जाता था। गुड़ी बांधने की परंपरा आज भी निभाई जा रही है। अंतर सिर्फ इतना आया है कि अब चांदी के बजाय लकड़ी के दंड पर गुड़ी बांधी जाती है।

17 अप्रैल तक मनेगी नवरात्रि

शक्ति की उपासना का पर्व चैत्र नवरात्र 9 से 17 अप्रैल तक श्रद्धा व उल्लास से मनाया जाएगा। इस बार मंगलकारी रेवती-अश्विन नक्षत्र के साथ सर्वार्थ और अमृत सिद्धि योग में मंगलवार को शक्ति का आगमन होगा। इस अवसर पर प्राचीन बिजासन माता मंदिर में नौ दिनी मेला लगेगा और श्रीविद्याधाम में 9 नवरात्र महोत्सव का आयोजन होगा। इसके साथ ही शहर के अन्नपूर्णा, काली मंदिर, वैष्णवधाम मंदिर में भी प्रतिदिन नवीन श्रृंगार और अनुष्ठान होंगे।

कांग्रेस प्रत्याशी के खिलाफ आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत

इंदौर। इंदौर से कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ रहे अक्षय कांति बम के खिलाफ आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत दर्ज कराई गई है। यह शिकायत भाजपा के पूर्व नगर संयोजन विधि प्रकोष्ठ एवं एडवोकेट पंकज वाधवानी ने दर्ज करवाई है। एडवोकेट पंकज वाधवानी ने शिकायत में कहा है कि आठ अप्रैल को इंदौर में प्रकाशित व प्रसारित होने वाले समाचार पत्रों के जरिए कांग्रेस उम्मीदवार ने अपना पम्प्लेट प्रसारित किया। इसमें प्रकाशक का नाम, प्रसार संख्या इत्यादि का कहीं पर भी उल्लेख नहीं किया गया। यह निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन का उल्लंघन है। इस मामले में आयोग के द्वारा शिकायत दर्ज कर जांच की जा रही है।

संपादकीय

कश्मीर : सऊदी अरब का नरम रूख

जैसी कि संभावना थी पाकिस्तान के नए प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ अपने दोस्त सऊदी अरब से कटोरा लेकर आर्थिक मदद मांगने गए थे। इसी मौके पर दोनों देशों के बीच कश्मीर सहित कई मुद्दों पर चर्चा हुई है। चर्चा के बाद जारी संयुक्त बयान में सऊदी ने कश्मीर मामले में पहले की तरह नरम रूख अपनाया है, यह भारत की राहत की बात है। इस रूख से यह भी साफ हुआ कि सऊदी भारत के साथ अपने रिश्तों को ज्यादा अहमियत देता है। ऐसे में कश्मीर पर कोई विपरीत स्टैंड लेकर वह भारत को नाराज नहीं करना चाहता। अलबत्ता उसने पाकिस्तान को 5 अरब डॉलर की आर्थिक सहायता पैकेज जरूर मंजूर किया। यह पुरानी परंपरा है कि कोई भी पाक प्रधानमंत्री पद संभालने के बाद आमतौर पर चीन और सऊदी अरब की यात्रा करता है। शहबाज की यह यात्रा तो मुख्य रूप से आर्थिक मदद मांगने के लिए ही थी। क्राउन प्रिंस ,मोहम्मद बिन सलमान और शहबाज़ शरीफ़ की बैठक के बाद दोनों देशों की ओर से जारी साझा बयान कहा गया है कि दोनों पक्षों को पुराने आपसी मसलों को बातचीत के ज़रिए सुलझाना चाहिए, ख़ासकर जम्मू और कश्मीर विवाद ताकि इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता लाई जा सके। लेकिन बयान में कश्मीर के मसले पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव का ज़िक्र नहीं किया गया है। यह सऊदी की कश्मीर नीति में उल्लेखनीय बदलाव है, वरना अतीत में सऊदी अरब पाकिस्तान कश्मीर मसले का समाधान संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव के ज़रिए करवाने की बात करता रहा है। बीते कुछ वक्त में सऊदी अरब ने कश्मीर के मसले पर नरम रुख़ ही अपनाया है। वह अब कश्मीर मसले को भारत का अंदरूनी मामला बताता रहा है। हालांकि उसका यह रूख हमेशा ऐसा ही नहीं रहा है। साल 2016 में सऊदी अरब ने कश्मीर के मुद्दे पर कश्मीरियों के आत्मनिर्णय की वकालत की थी। सऊदी अरब का ये बयान पीएम मोदी के दौरे के फ़ौरन बाद आया था। दौरे में प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने शहबाज शरीफ के पाक दौरे के निमंत्रण को मंजूर कर लिया है। गौरतलब है कि सऊदी अरब पाकिस्तान और भारत दोनों का मित्र देश है। मगर कश्मीर के मसले पर पाकिस्तान और सऊदी अरब के सुर बीते कुछ वक्त में अलग नज़र आए हैं। यही एक ऐसा मसला रहा है, जिसके कारण सऊदी अरब और पाकिस्तान के बीच भी दूरियां भी देखने को मिली हैं। जब साल 2019 में कश्मीर से अनुच्छेद 370 को ख़त्म किया गया था, तब पाकिस्तान ने खुलकर भारत की आलोचना की थी और इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठाने की कोशिश की थी। जबकि सऊदी अरब ने अनुच्छेद 370 हटाए जाने पर चिंता तो ज़ाहिर की थी लेकिन इसे भारत का अंदरूनी मामला बताया था। तब सऊदी अरब के नरम रुख़ पर पाकिस्तान ने नाराजगी भी जताई थी। साल 2020 में अनुच्छेद 370 के विशेष प्रावधानों को हटाए जाने की पहली सालगिरह के मौक़े पर तत्कालीन पाकिस्तानी विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी ने मायूसी ज़ाहिर की थी। कुरैशी को यहां तक डींगें हांक गए थे कि 'पाकिस्तान का मुसलमान सऊदी अरब के लिए लड़ने मरने को तैयार है। वो आपसे कह रहा है कि कश्मीर के मसले पर उस नेतृत्व की भूमिका निभाएं, जो मुसलमान आपसे उम्मीद कर रहे हैं। कुरैशी ने अगस्त, 2020 में इस्लामिक देशों के संगठन 'ऑर्गनाइज़ेशन ऑफ़ इस्लामिक कॉपरेशन' यानी 'ओआईसी' की भी आलोचना की थी। पाक की इस हाय तौबा को दुनिया ने ज्यादा तवज्जो नहीं दी थी। दूसरी तरफ भारत यह स्टैंड हमेशा रहा है कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है।

नजरिया

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

हिमालय पर तापमान बढ़ने के खतरे

संपूर्ण हिमालय के पहाड़ एवं भूभाग 21वीं शताब्दी के सबसे बड़े बदलाव के खतरनाक दौर से गुजर रहे हैं। इसी स्थाई हिम-रेखा 100 मीटर पीछे खिसक चुकी है। यहां जाड़ों में तापमान 1 डिगी बढ़ने से हिमखंड तीन किमी तक सिकुड़ चुके हैं। नतीजतन बर्फबारी का ऋतुचक्र डेढ़ महीने आगे खिसक गया है। हिमालय क्षेत्र में जो बर्फबारी दिसंबर-जनवरी माह में होती थी, वह फरवरी मध्य से शुरू होकर मार्च 2024 तक जा रही रही है। उत्तराखंड के वाडिया हिमालय भू-विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों ने 1901 से लेकर 2018 तक के जलवायु अनुसंधान इकाई के आंकड़ों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला है कि तापमान ऐसे ही बढ़ता रहा तो 8 से 10 साल के भीतर हिमालय पर बर्फबारी का मौसम पूरी तरह परिवर्तित हो जाएगा या बर्फबारी की मात्रा घट जाएगी। दिसंबर-जनवरी की बर्फीली बारिश इन महीनों में तापमान कम होने के कारण सूख कर जम जाती थी, लेकिन इन माहों में आसमान से जो बर्फ गिरी, वह तापमान ज्यादा होने के कारण पिघल कर बह गई। अतएव आशंका की जा रही है कि इस बार हिमालय की चोटियां और सतही भूमि जल्द ही बर्फ से खाली हो जाएगी। उत्तराखंड में समुद्रतल से 11,385 फीट ऊंचाई पर बना तुंगनाथ मंदिर के क्षेत्र में 14 साल पहले जनवरी में जितनी बर्फ मौजूद होती थी, उतनी इस बार मार्च में है। यह स्थिति इतनी ऊंचाई पर बर्फीली बारिश के बदलते स्वरूप को दर्शाती है। संस्थान का यह शोध-अध्ययन हाल ही में प्रकाशित हुआ है।

भू-गर्भ वैज्ञानिक डॉ. मनीश मेहता के अनुसार, 'पहले दिसंबर-जनवरी में हर साल सूखी बर्फबारी होती थी, जो तापमान कम रहने के कारण जमी रहती थी। इससे हिमखंड सुरक्षित व सुगठित रहते थे। पारा चढ़ने पर सूखी बर्फबारी बंद हो गई। बाद में गीली बर्फ गिरी, जो थोड़ी गर्मी होते ही पिघलने लग गई।' पहाड़ों पर अमूमन गर्मी मई माह से शुरू होती थी। परंतु बीते एक दशक में सर्दी का तापमान तो बढ़ा है, जबकि गर्मी का स्थिर है। इसलिए हिमालय में गर्मी ज्यादा समय बनी रहती है। ये बदलते हालात हिमालय के जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के लिए खतरे की घंटी हैं। स्थाई बर्फीली रेखा हिमालय पर 4 से 5 हजार मीटर ऊपर होती है। यह स्थाई बर्फ के कारण बनती है। इसके तीन हजार मीटर नीचे तक वनस्पतियां नहीं होती हैं। इस रेखा के पीछे खिसकने से जहां पहले कम तापमान में हिमपात होता था, वहां अब बारिश होने लगी है। परिणामस्वरूप हिमालय के कई किमी क्षेत्र से बर्फ विलुप्त होने लगी है। इस सिलसिले में वाडिया संस्थान के वैज्ञानिक विनीत कुमार का कहना है कि मौसम चक्र बदलने का सबसे ज्यादा असर देश के उत्तर-पूर्वी भाग्य में हुआ है। सुदुर संवेदन उपग्रह के आंकड़े बताते है कि अरुणाचल प्रदेश में 1971 से 2021 के मध्य ज्यादातर हिमखंड 9 मीटर प्रतिवर्ष की औसत गति से 210 मीटर पीछे खिसक गए हैं। जबकि लद्दाख में यह रफ्तार 4 मीटर प्रतिवर्ष रही है। कश्मीर के हिमखंडों के पिघलने की गति भी लगभग यही रही है।

वाडिया संस्थान के पूर्व वैज्ञानिक डॉ. डीपी डोभाल के अनुसार, 'जहां आज गंगोत्री मंदिर है, वहां कभी हिमखंड हुआ करता था। परंतु जैसे-जैसे तापमान बढ़ा और ऋृतुचक्र बदला वैसे-वैसे हिमखंड

सिकुड़ता चला गया। 1817 से लेकर अब तक यह 18 किमी से ज्यादा पीछे खिसक चुका है। करीब 200 साल पहले हिमखंड खिसकने का दस्तावेजीकरण सर्वे ऑफ इंडिया के भूविभानी जॉन हॉजसन ने किया था। उससे पता चला था कि 1971 के बाद से हिमखंडों के पीछे हटने की रफ्तार 22 मीटर प्रतिवर्ष रही है।' कुछ साल पहले गोमुख के विशाल हिमखंड का एक हिस्सा टूटकर भागीरथी, यानी गंगा नदी के उद्गम स्थल पर गिरा था। हिमालय के हिमखण्डों का इस तरह से टूटना प्रकृति का अशुभ संकेत माना गया है। इन टुकड़ों को गोमुख से 18 किलोमीटर दूर गंगोत्री के भागीरथी के तेज प्रवाह में बहते देखा गया था। गंगोत्री राष्ट्रीय उद्यान के वनाधिकारी ने इस हिमखण्ड के टुकड़ों के चित्रों से इसके टूटने की पुष्टि की थी। तब भी ग्लेशियर वैज्ञानिक इस घटना की पृश्ठभूमि में कम बर्फबारी होना बता रहे थे। इस कम बर्फबारी की वजह धरती का बढ़ता तापमान बताया जा रहा है। यदि कालांतर में धरती पर गर्मी इसी तरह बढ़ती रही और हिमखंड क्षरण होने के साथ टूटते भी रहे तो इनका असर समुद्र का जलस्तर बढ़ने और नदियों के अस्तित्व पर पड़ना तय है। गरमाती पृथ्वी की वजह से हिमखण्डों के टूटने का सिलसिला आगे भी जारी रहा तो समुद्र का जलस्तर बढ़ेगा, जिससे कई लघु द्वीप और समुद्रतटीय शहर डूबने लग जाएंगे। हालांकि वैज्ञानिक अभी तक यह निश्चित नहीं कर पाए हैं कि इन घटनाओं को प्राकृतिक माना जाए या जलवायु परिवर्तन के कारण टूटना माना जाए ?

अब तक हिमखण्डों के पिघलने की जानकारियां तो आती रही हैं, किंतु किसी हिमखण्ड के टूटने की घटना अपवादस्वरूप ही सामने आती है। हालांकि कुछ समय पहले ही आस्ट्रेलियाई वैज्ञानिकों की ताजा अध्ययन रिपोर्ट से पता चला था कि ग्लोवल वार्मिंग से बढ़े समुद्र के जलस्तर ने प्रशांत महासागर के पांच द्वीपों को जलमग्न कर दिया है। यह अच्छी बात थी कि इन द्वीपों पर मानव बस्तियां नहीं थीं, इसलिए दुनिया को विस्थापन और शरणार्थी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। दुनिया के नक्षे से गायब हुए ये द्वीप थे, केल, रेपिता, कालातिना, झोलिम एवं रेहना। पापुआ न्यू गिनी के पूर्व में यह सालोमन द्वीप समूह का हिस्सा थे। पिछले दो दषकों में इस क्षेत्र में समुद्र के जलस्तर में सालाना 10 मिली की दर से बढ़ोत्तरी हो रही है। गोमुख के द्वारा गंगा के अवतरण का जलस्त्रोत बने हिमालय पर जो हिमखण्ड हैं, उनका टूटना भारतीय वैज्ञानिक फिलहाल साधारण घटना मानकर चल रहे हैं। उनका मानना है कि कम बर्फबारी होने और ज्यादा गर्मी पड़ने की वजह से हिमखण्डों में दरारें पड़ गई थीं, इनमें बरसाती पानी भर जाने से हिमखण्ड टूटने लग गए। अभी गोमुख हिमखण्ड का बाईं तरफ का एक हिस्सा टूटा है। उत्तराखंड के जंगलों में हर साल लगने वाली आग की आंच ने भी हिमखण्डों को कमजोर करने का काम किया है। आंच और धुएं से बर्फीली शिलाओं के ऊपर जमी कच्ची बर्फ तेजी से पिघलती चली गई। इस कारण दरारें भर नहीं पाईं। अब वैज्ञानिक यह आशंका भी जता रहे हैं कि धुएं से बना कार्बन यदि शिलाओं पर जमा रहा तो भविष्य में नई बर्फ जमना मुश्किल होगी ?

हिमखण्डों का टूटना तो नई बात है, लेकिन इनका पिघलना नई बात नहीं है। शताब्दियों से प्राकृतिक रूप में हिमखण्ड पिघलकर नदियों की अविरल जलधारा बनते रहे हैं। लेकिन भूमण्डलीकरण के बाद प्राकृतिक संपदा के दोहन पर आधारित जो औद्योगिक विकास हुआ है, उससे उर्त्सिजत कॉर्बन ने इनके पिघलने की तीव्रता को बढ़ा दिया है। एक शताब्दी पूर्व भी हिमखण्ड पिघलते थे, लेकिन बर्फ गिरने के बाद इनका दायरा निरंतर बढ़ता रहता था। इसीलिए गंगा और यमुना जैसी नदियों का प्रवाह बना रहा। किंतु 1950 के दशक से ही इनका दायरा तीन से चार मीटर प्रति वर्ष घटना शुरू हो गया था। 1990 के बाद यह गति और तेज हो गई इसके बाद से गंगोत्री के हिमखण्ड प्रत्येक वर्ष 5 से 20 मीटर की गति से पिघल रहे हैं। कमोवेश यही स्थिति उत्तराखण्ड के पांच अन्य हिमखण्ड सतोपंथ, मिलाम, नीति, नंदादेवी और चोराबाड़ी की है। भारतीय हिमालय में कुल 9,975 हिमखण्ड हैं। इनमें 900 उत्तराखण्ड के क्षेत्र में आते हैं। इन हिमखण्डों से ही ज्यादातर नदियां निकली हैं, जो देश की 40 प्रतिशत आबादी को पेय, सिंचाई व आजीविका के अनेक संसाधन उपलब्ध कराती हैं। किंतु हिमखण्डों के पिघलने और टूटने का यही सिलसिला बना रहा तो देश के पास ऐसा कोई उपाय नहीं है कि वह इन नदियों से जीवन-यापन कर रही 50 करोड़ आबादी को रोजगार व आजीविका के वैकल्पिक संसाधन दे सकें?

बढ़ते तापमान को रोकना आसान काम नहीं है, बावजूद हम अपने हिमखंडों को टूटने और पिघलने से बचाने के उपाय औद्योगिक गतिविधियों को विराम देकर एक हद तक रोक सकते हैं। पर्यटन के रूप में मानव समुदायों की जो आवाजाही हिमालयी क्षेत्रों में बढ़ रही है, उस पर भी अंकुश लगाने की जरूरत है। इसके अलावा वाकई हम अपनी बर्फीली शिलाओं को सुरक्षित रखना चाहते हैं तो हमारी ज्ञान परंपरा में हिमखंडों के सुरक्षा के जो उपाय उपलब्ध हैं, उन्हें भी महत्व देना होगा। हिमालय के शिखरों पर रहने वाले लोग आजादी के दो दशक बाद तक बरसात के समय छोटी-छोटी क्यारियां बनाकर पानी रोक देते थे। तापमान शून्य से नीचे जाने पर यह पानी जमकर बर्फ बन जाता था। इसके बाद इस पानी के ऊपर नमक डालकर जैविक कचरे से इसे ढक देते थे। इस प्रयोग से लंबे समय तक यह बर्फ जमी रहती थी और गर्मियों में इसी बर्फ से पेयजल की आपूर्ति की होती थी। इस तकनीक को हम 'वाटर हार्वेस्टिंग' की तरह 'स्नो हार्वेस्टिंग' भी कह सकते हैं। हालांकि पृथ्वी के ध्रुवों में समुद्र के खारे पानी को बर्फ में बदलने की क्षमता प्राकृतिक रूप से होती है। बहरहाल हिमखंडों के टूटने या गलने की घटनाएं चिंताजनक हैं।

राजनीति

रमेश कुमार 'रिपु'

लेखक पत्रकार हैं।

भाजपा का आंकड़ा और विपक्ष का दावा

भाजपा का दांव सबसे ऊंचा है। उसे तीसरी बार सत्ता की कमान चाहिए। इसलिए उसने एक नया नारा गढ़ कर अपने समर्थकों का मनोबल ऊंचा किया है। अबकि बार चार सौ के पार। जबकि बीजेपी के आंतरिक सर्वे में वह 106 सीटों पर कमजोर है। और सौ ऐसी सीटें है,जहां जीतना उसके लिए टेढ़ी खीर है। मोदी कहते हैं,बीजेपी 370 के पार रहेगी। अमितशाह ने कहा सवा तीन सौ सीट बीजेपी को मिलेगी। जीत का विश्वास लेकर मोदी चुनावी समर में उतर रहे हैं। प्रशांत कुमार कह रहे हैं, बीजेपी को तीन सौ सीट मिलेगी। सबके अपने अपने दावे हैं। झटका देने के लिए सबके पास सटका है। 36 फीसदी वोट पाने वाली बीजेपी 62 फीसदी वोट वाली पार्टी को शिकस्त देने हर ढीले सियासी पेंच को कस रही है। वहीं विपक्ष के सर्वे में बीजेपी को 186 सीट मिल रही है। विपक्ष का दावा तभी सच हो सकता है,जब चुनाव मुद्दे पर होंगे ।

तीसरी बार सत्ता की कमान के लिए अधिक से अधिक सीट पाने बीजपी हर सियासी पेंच को कस रही है। इसीलिए बीजेपी ऐसी पार्टियों से हाथ मिला रही है,जिसे पार्टी के लोग पसंद नहीं कर रहे हैं। राज ठाकरे के समर्थकों ने यू.पी. और बिहार के लोगों के साथ मुंबई में जो जुल्म ढाए थे,उसे कोई भूला नहीं है। ऐसी पार्टी के साथ गठबंधन करने पर क्या यूपी,बिहार वाले वोट करेंगे ? बीजेपी का 2019 में जिस पार्टी के साथ गठबंधन था,वो अब नहीं है। यानी सांप सीढ़ी वाली राजनीति से बीजेपी का सामना है। सीढ़ी मिल गयी तो ऊपर,वरना सांप ने डस लिया तो धम्म से नीचे।

महाराष्ट्र में बीजेपी एकनाथ शिंदे के भरोसे 48 सीट में अबकि बार 41 सीट पाने से रही। क्यों कि अब बीजेपी के साथ उद्धव ठाकरे नहीं हैं। महाराष्ट्र में शिवसेना ने 18 सीट और एनसीपी ने 4 सीट 2019 में जीती थी। अबकि बार बीजेपी की सीट आधी होने के आसार हैं। पश्चिम बंगाल की 42 सीट में उसे 2019 में 18 सीट मिली थी। सीएए के जरिए उसकी सीट बढ़ेगी,ऐसा उसे भरोसा है। जबकि माना जा रहा है,इस बार बीजेपी 10 सीट से ज्यादा नहीं पा रही है। पंजाब में कांग्रेस 13 सीट में आठ सीट जीती थी,आम आदमी पार्टी एक सीट। अकाली दल 2 और बीजेपी 2 सीट जीती थी। बीजेपी और अकाली दल फिर एक साथ हो गए है। संभावना है, एक दो सीट मिल सकती है। दिल्ली की सातों सीट बीजेपी के खाते में गयी थी। इस बार कांग्रेस और आम आदमी पार्टी में समझौता हो गया है। तीन सीट पर कांग्रेस और चार सीट पर आम आदमी पार्टी चुनाव लड़ेगी। सीधी फाइट में बीजेपी को नुकसान है। वहीं दिल्ली में ज्यादातर लोगों का कहना है, केजरीवाल को मोदी जेल भेजकर अच्छा नहीं किये हैं। केजरीवाल आंदोलन से निकला व्यक्ति है। दिल्ली में बीजेपी दो सीट पा जाए यही बहुत है।

बिहार की 40 सीट में बीजेपी को नीतीश के साथ 39 सीट मिली थी। लेकिन पश्चिमी और पूर्वी बिहार में एनडीए की स्थिति पहले जैसी नहीं है। नीतीश से आधे बिहारी नाराज हैं । इस बार बिहार में जदयू को अपना वजूद बचाने के लाले पड़ने के आसार हैं। कोयरी,कुर्मी,अन्य पिछड़ा वर्ग, और मुस्लिम वोटर नीतीश से नाराज है। पूर्णिया में 39.47 फीसदी मुस्लिम और हिन्दू 60.94 फीसदी हैं। अररिया में मुस्लिम 42.95 और हिन्दू 56.68 फीसदी हैं। किशनगंज में मुस्लिम 67.98 और हिन्दू 31.43 फीसदी हैं। कटियार में44.47 फीसदी मुस्लिम और 54.85 फीसदी हिन्दू हैं। बिहार में मजहबी आंकड़ा हिन्दू 82.69,मुस्लिम 16.87,ईसाई 0.12 और सिक्ख 0.02 फीसदी हैं। महागठबंधन के साथ यादव 83 फीसदी और एनडीए के साथ 5 फीसदी हैं। कुर्मी महागठबंधन के साथ 62 फीसदी और एनडीए के साथ 31 फीसदी। कोयरी 27 फीसदी एनडीए के साथ और महागठबंधन के साथ 41 फीसदी। मुस्लिम महागठबंधन के साथ 78 फीसदी और एनडीए के साथ 4 फीसदी। जाहिर सी बात है कि नीतीश के पाला बदलने से एनडीए को कोई खास बढ़त मिलती नहीं दिख रही है। समीकरण में सेंधमारी के लिए बीजेपी सीमांचल में तैयारी कर रही है। लेकिन उसे सफलता मिलते नहीं दिख रहा है। कहा जा रहा है,कि पलटू पॉलिटिक्स इस बार बीजेपी और जदयू दोनों को ले डूबेगा।

कर्नाटक की 28 सीट में 25 सीट पर बीजेपी जीती थी। एक-एक सीट कांग्रेस,जेडीएस और निर्दलीय को 2019 में मिली थी। लेकिन अब वहां कांग्रेस की सरकार है। यहां बीजेपी विधान सभा बहुत बुरी तरह हार चुकी है। जाहिर सी बात है,कि कर्नाटक उसके लिए कंटक साबित होगा। शिवकुमार चाणक्य की भूमिका में हैं। मोदी को अबकि 5-6 सीट के भी लाले हैं। दस राज्यों की कुल सीट 254 होती है। 2019 जैसी स्थिति अब बीजेपी के साथ नहीं है। यानी इन राज्यों में ही खेला हो गया तो कैसे चार सौ के पार एनडीए जाएगा? आन्ध्र प्रदेश की 25 सीट में वायएसआर 23 सीट और टीडीपी को 3 सीट मिली थी। कांग्रेस और बीजेपी को एक भी सीट नहीं। जगन रेड्डी की हर बात मोदी मानते हुए उनसे हाथ मिला। ताकि आन्ध्र में बीजेपी खाता खोल सके। ओड़िशा के नवीन पटनायक से भी हाथ मिला लिया है। ओड़िसा की 21 सीट में 12 सीट बीजेडी,8 बीजेपी और एक सीट कांग्रेस को 2019 में मिली थी। तेलंगाना के के. सी. आर. से भी समझौता कर लिया। यहां 17 सीट है। जिसमें चार सीट बीजेपी को 2019 में मिली थी। नौ सीट टीआरएस को। तीन सीट कांग्रेस को। एक सीट ओवैसी की पार्टी को।माना जा रहा है कि बीजेपी को इस बार एक सीट का नुकसान होगा। तमिलनाडु में एम.के स्टालिन की वजह से कमल खिलने के आसार कम हैं। जबकि यह माना जा रहा था कि मोदी के दौरे और तमिलनाडु इकाई के अध्यक्ष अन्नामलाई की मेहनत का रंग दिखेगा। तमिलनाडु में 2019 के चुनाव में डीएमके गठबंधन ने राज्य की 39 सीट में 38 सीट जीती थी। इस बार सियासी हालात ठीक नहीं है। क्यों कि इस बार एआईएडीएमके टूट का शिकार है। पार्टी के अंदर एडप्पादी पलानी स्वामी और पनीरसेल्वम के धड़े अलग -अलग हैं। पार्टी ने पनीरसेल्वम को बाहर का रास्ता दिखा चुकी है। इस वजह से एआईएडीएमके कमजोर हुई है। साथ ही उसने बीजेपी का भी साथ छोड़ दिया है। बावजूद इसके बीजेपी मजबूत गठबंधन बनाकर चुनावी मैदान में उतर रही है। पूर्व मुख्यमंत्री जयललीता की करीबी शशिकला का भतीजा दिनाकरन बीजेपी के साथ मिलकर चुनाव लड़ रहा है।यदि एआईएडीएमके का प्रदर्शन खराब रहा तो इसका सीधा फायदा एम.के स्टालिन यानी डीएमके को होगा।

मध्यप्रदेश की 29 सीट में सिर्फ एक सीट कांग्रेस जीती थी। छत्तीसगढ़ की 11 सीट में दो सीट कांग्रेस को मिली थी। विधान सभा के चुनाव परिणाम के अनुसार दोनों राज्यों में करीब चार-चार सीट मिलनी चाहिए। कमलनाथ कहते हैं,कि कांग्रेस एम.पी.में 10-12 सीट जीतेगी।राजस्थान की 25 सीटों में 24 बीजेपी और एक सीट सहयोगी पार्टी लोकतांत्रिक पार्टी जीती। इन राज्यों में कांग्रेस और बीजेपी के बीच सीधी चुनावी लड़ाई है। इस बार इन राज्यों में बीजेपी सीट घट सकती है। लेकिन चुनाव से पहले बीजेपी ऐसा महौल बनाने में लगी है,कि विपक्ष चुनाव से पहले ही मैदान छोड़ दे। वैसे बीजेपी पूरे पांच साल चुनाव ही लड़ती है। जबकि विपक्ष आखिरी साल के छह माह चुनाव की तैयारी करती है। सवाल यह है कि दस साल के बीजेपी के सामने एंटीइन्कमबैसी भी है। पुलवामा कांड, बाला कोट, अच्छे दिन दूर क्यों है।,इलेक्टोरल बांड कांड,सरकारी एजेंसी का दुरूप्रयोग,अपने दस साल के काम काज पर श्वेत पत्र संसद में प्रस्तुत करना चाहिए,वो पुरानी सरकार के खिलाफ श्वेत पत्र पेश करते हैं। 2014 से पहले देश का क्या हाल था,यह बताना देश को हैरान करता है। सवाल यह है कि देश को भरमाने से क्या वोट मिल सकता है? गंगा साफ हो गयी। महंगाई कम हो गयी। दो करोड़ हर साल रोजगार मिलने लगा। काला धन आ गया। करेप्ट नेताओं का पैसा गरीबों में बांट देंगे। सब के जेब में 15 लाख रुपए आ गये। पश्चिम बंगाल के मनरेगा के 21 लाख मजदूरों का मजदूरी तीन साल से रोक रखा है। क्या वो मिल गया। सहारा का पैसा गरीबों को मिलने लगा? अमितशाह के पांच हजार करोड़ बांटने की बात जुमला साबित हुआ ।रुपए के सामने डॉलर औधे मुंह गिर गया। पेट्रोल चालीस रुपए लीटर मिलने लगा क्या? मोदी की गारंटी महंगाई और बेरोजगारी के लिए क्यों नही? किसानों की आमदनी दोगुनी हो गयी क्या? महिला आरक्षण बिल लाए क्यों? सवाल यह है कि जुमलों की बारिश आखिर कब तक?

दिल्ली के रामलीला मैदान में 25 से ज्यादा दलों ने चुनाव से पहले बड़ी रैली की। रैली में गठबंधन के 21 नेताओं ने जनसभा को संबोधित किया। राहुल गांधी ने कहा,नरेंद्र मोदी जी इस चुनाव से पहले मैच फिक्सिंग की कोशिश कर रहे है। उन्होंने हमारी टीम से दो खिलाड़ियों को अरेस्ट करके अंदर कर दिया। उनका 400 का नारा बिना मैच फिक्सिंग के बिना सोशल मीडिया और मीडिया पर दबाव डाले 180 से ज्यादा नहीं हो पा रहा है। कांग्रेस देश की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी है। लेकिन हमारे अकाउंट्स फ्रीज करा लिए गए हैं। हमें पोस्टर छपवाने हैं,कार्यकर्ताओं को राज्यों में भेजना है,लेकिन हमारे अकाउंट्स फ्रीज हैं। ये पूरी की पूरी मैच फिक्सिंग की कोशिश की जा रही है। मेरी बात गौर से सुन लीजिए। अगर भाजपा जीती और उन्होंने संविधान को बदला तो इस पूरे देश में आग लग जाएगी। ये देश नहीं बचेगा। ये चुनाव वोट वाला चुनाव नहीं है। ये चुनाव हिंदुस्तान को बचाने वाला चुनाव है।

बहरहाल 25 से अधिक दलों की महारैली से एक बात साफ है, कि हाथ से हाथ मिल गए तो सरकार बदल जाएगी। यह तभी संभव जब नेताओं का करिश्मा मोदी की गारंटी के पांव उखाड़ दे। वैसे जनता का वोट सबसे बड़ी अदालत है। और हमेशा अपनी गलती से ही सत्ता पक्ष मुंह की खाता है।

वह फिट हो गया है

राष्ट्रीय स्तर के सभी टी. वी . चैनल्स पर ब्रेकिंग न्यूज आ रही है कि वह फिट हो गया। ब्रेकिंग न्यूज़ के साथउसकी बेटिंग , बोलिंग के पुराने क्लिप भी आ रहे है जो दर्शको में खासी उत्तेजना भर रहे है। अब यही खबर कल के सभी अखबार की हेड लाइन होगी। सोशल मीडिया पर यह न्यूज ट्रेंड कर रही है। उसका वीडियो वायरल हो रहा हैजिसमे वह खेल के मैदान में पसीना बहा रहा है और फिर कैमरा की तरह देखते हुए दिलकश मुस्कान के

कटाक्ष

मृदुल कश्यप शर्मा

लेखक व्यंग्यकार हैं।

साथ हाथो की अँगुलियों से वी बना रहा है।

कल तक जो कंधे के हेयर लाइन फ्रैक्चर से, ऐड़ी की मांसपेशियां के खिंचाव से , टखने में सूजन से, पीठ की तकलीफ आदि से परेशान था । जिसका भारत से बाहर ऑपरेशन चल रहा था या जिसका ऑपरेशन हो भी गया था और जो रिहेबिटेशन सेंटर में वातानुकूलित कमरे में बैठा गोभी के पकोड़े खा रहा था। वह कई हफ्तों से अनफिट था, जी हां वही । उसके बारे में आज अचानक खबर मिली है कि वह फिट हो गया है। अब वह मैदान में वापसी करेगा।अपने बल्ले और गेंद से आलोचकों का मुंह बंद करेगा।

जब वह अनफिट था तब उसकी अच्छी सेहत लिए उसके समर्थकों ने क्या-क्या नहीं किया । उसके जल्दी फिट होने के लिए अलोन उपवास करे ,ज्योतिषियों द्वारा बतलाएं गए राहू, केतु और शनि देव के उपाय करे, सभी प्रसिद्ध धार्मिक स्थलो पर मन्नतें मांगी, ओझाओ -गुनियाओं से तरह तरह के मंतर तंतर करवाए और तो और ना ना प्रकार के टोने टोटके भी करें। बस एक ही कोशिश थी कैसे भी वह जल्दी से ठीक हो जाए और अपने देश के लिए खेले । देश की राष्ट्रीय टीम में खेले और विदेशी टीम कोनाकों चने चबवाए। अपने बेट और बॉल से विदेशियों के छक्के छुड़ा दे।

पर उन सभी फैन्स की सभी मनौतियां बेकार गई । विदेशी की टीमे अपना लंबा चौड़ा दौरा पूरा करके , हमारे देश के गोलगप्पे खा खा कर वापस अपने अपने देश चली गई। पर वह ठीक नहीं हो पाया तो नही हो पाया । कोशिश उसने बहुत करी पर चोट गहरी ही इतनी थी कि वह ठीक न हो पाया। वह कभी किसी एक आध मैच में खेला भी पर अपनी चोट के कारण बेहतर परफॉर्म नहीं कर पाया।

पर अब वह पूरी तरह से ठीक है। और तो और उसनेबेहद मुश्किल यो -यो टेस्ट भी पास कर लिया है। अब वह अपने मालिक के लिए खेलेगा। उनकी टीम को विनिंग टीम बनाएगा। उनके मालिक भी बेहद खुश नजर आए है। उन्होंने भी सोशल मीडिया पर उसका स्वागत किया है।

क्रिकेट पंडित टीवी चैनल की विभिन्न चैनलों पर जम गए हैं और अपने हिसाब से स्थिति का विश्लेषण कर रहे हैं कि इससे क्या नफा नुकसान होगा। वह बतला रहे है कि कैसे इसके बाद विपक्षी टीम को अपनी रणनीति बदलना पड़ेगी। खेल में क्या क्या बदलाव होगे। बल्लेबाजी का क्रम कौन सा उपयुक्त रहेगा।

अब जल्दी ही वह तेल साबुन बेचते हुए दिखलाई देगा। उसके बल्ले पर किस ब्रांड का स्टीकर लगेगा इस पर उसके मैनेजर डिस्कस कर रहे । ऐसा नही है कि जब वह अनफिट था तब उसने कुछ नही बेचा। तब वह बीमा पालिसी और पान मसाला बेच रहा था। पर अब ब्रांड बदल जाएँगे। कुछ फेंस तो प्रतीक्षा कर रहे है वह आए और मशवरा दे कि कौन सी कार खरीदनी है। अब इस समाचार के बाद फेंस उसके इंतजार में टी. वी. के सामने डट गए है ।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

सुधाकर आशावादी

बेस्वाद चाय और विकास का हिसाब

चाय स्वादिष्ट कैसे बने? इसके लिए चाय विशेषज्ञ नित्य ही नए नए प्रयोग करते रहते हैं। कहीं चाय नुक्कड़, कहीं चाय चस्का, कहीं स्पेशल टी स्टॉल, जो चाय से ही अपनी रोजी रोटी चला रहा हो, उसकी चाय में स्पेशल स्वाद नही मिलेगा, तो उसकी दुकान चलेगी कैसे ? आजकल इसी चाय के स्वाद पर संकट है। चाय का घूंट भरते हुए एक श्रीमान जी अपनी श्रीमती जी से पूछते है कि भाग्यवान आज चाय में स्वाद क्यों नही है ? श्रीमती जी तुनककर जवाब देती हैं, कि जब व्हाट्सएप्प यूनिवर्सिटी से ज्ञान प्राप्त करके किसी को अपना मुखिया चुनोगे तो वह चीनी चाय पत्ती और दूध महँगा करेगा ही, फिर चाय में स्वाद कैसे आएगा ? उसके बाद श्रीमती जी श्रीमान जी के सम्मुख मुखर होकर कहती हैं कि मेरे विकास का हिसाब दो। समझ नही आता कि श्रीमती जी कौन से विकास का हिसाब मांगती हैं। अपने शारीरिक विकास का, मानसिक विकास का या आध्यात्मिक विकास का । श्रीमती जी की बातों को सुनकर लगता है कि वे अपने विकास से संतुष्ट नहीं हैं। हो सकता है कि उनका समुचित विकास न हुआ हो। उनका स्वास्थ्य खराब रहता हो। उनका संतुलित विकास न हो पा रहा हो। उनका रोग चिकित्सकों की पकड़ में न आ रहा हो। उन्हें बदहजमी की शिकायत हो, उनकी जीभ का स्वाद ही लुप्त हो चुका हो या चाय बनाने के लिए प्रयोग किया जाने वाला मसाला खत्म हो गया। लोंग, इलायची, दालचीनी, अदरक का प्रयोग न करके श्रीमती जी ने सादी चाय बनाकर श्रीमान जी के सम्मुख परोस दी हो। समस्या कोई भी हो सकती है। समस्या कोई भी हो, अपनी गलती का इल्ज़ाम औरों के सर पर मढ़ना लोगों की आदत हो गई है। यदि गलती पकड़ी जाय और सिद्ध हो जाए तो अपनी गलती के समानांतर उदाहरण देने लगते हैं, कि ऐसी गलती तो और भी करते हैं, पर उन पर कोई इल्ज़ाम नही लगता। अब चाय के स्वाद से विकास का हिसाब मांगने वाले सवाल की बात करते हैं, तो लगता है कि सवाल ही गलत पूछा गया है। क्या किसी चिकित्सक से पूछा जा सकता है कि हिदायतों के अनुसार दवा खाने पर भी मरीज के स्वास्थ्य में सुधार क्यों नही हुआ ? चिकित्सक क्या जाने कि मरीज के घर का वातावरण कैसा है ? मरीज के मानसिक विकास के लिए उसके अध्यापक उसे सही से शिक्षा देते भी हैं या नहीं ? क्या मरीज का मानसिक विकास उसके शारीरिक विकास के अनुरूप हुआ भी या नही ? क्या अधेड़ मरीज अपने बचपन से युवावस्था की दहलीज पार करते हुए अधेड़ावस्था तक पहुंचा है या नासमझी भरी बातों पर ही प्रोत्साहन मिलने से खुद को समझदार समझने लगा। हिसाब तो बनता है विकास का भी और विनाश का भी। पर यह हिसाब किस से मांगा जाए अपरिपक्व मस्तिष्क वाले मरीज के अभिभावकों से, उसके मित्रों परिचितों से या उसके चिकित्सकों से, जिन्होंने मरीज की सही स्थिति से उसके परिजनों को अवगत नही कराया। वैसे चाहे कारण कुछ भी रहा हो, चाय में जायका नही आ रहा हो या विकास अवरुद्ध हो रहा हो, तब श्रीमती जीके सवालों के जवाब ढूंढने पड़ेंगे ही, ताकि जानबूझ कर विकास न देख पाने वालों और चाय का स्वाद खराब बताने वालों का हाजमा भी ठीक हो सके और उनकी आंखों का धुंधलापन भी दूर हो सके।

आर्थिकी

डॉ. जीतेंद्र डेहरिया

लेखक गर्ल्स कॉलेज छिन्दवाड़ा में अर्थशास्त्र के शिक्षक हैं।

आदिवासियों के कमजोर आर्थिक विकास के लिए जिम्मेदार कौन ?

जैसा कि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने कहा है कि किसी भी अर्थव्यवस्था का आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिएपूँजी संचय या आर्थिक वृद्धि एक आवश्यक शर्त है। जबकि कल्याणकारी अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि आर्थिक वृद्धि आर्थिक विकास की गारंटी नहीं देता है बल्कि इसके लिए आय का उचित वितरण और लोगों को समर्थ बनाना ज्यादा जरुरी है ताकि वे खुद अपने जीवन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति सकें। लेकिन यदि व्यावहारिक रूप में देखा जाए तो किसी भी अर्थव्यवस्था का विकास संतुलित रखने के लिए दोनों शर्तें आवश्यक हैं क्योंकि दोनों एक दूसरे की पूरक हैं जो बचत और निवेश पर निर्भर करता है। वर्तमान में अधिकांश देश विकास से ज्यादा अपनी आर्थिक वृद्धि को लेकर गंभीर हैं और अपनी आर्थिक वृद्धि और विकास को विभिन्न मापदंडों के माध्यम से मापते हैं ताकि वे स्वयं की स्थिति जान सकें और कमजोर पहलुओं पर उचित नीति नीति बनाकर उनमें सुधार कर सकें । इसी के साथ वे अपने आर्थिक और सामाजिक संकेतकों को अन्य देशों के साथ भी तुलना कर सकें। वर्तमान में देखा जाय तो भारत की आर्थिक वृद्धि दर दुनिया के अन्य देशों से बेहतर है क्योंकि आर्थिक वृद्धि दर को बढ़ाने के लिए सरकार बहुत सी कल्याणकारी योजनाओं के चलाने के साथ-साथ सार्वजनिक संस्थाओं और सार्वजनिक संपत्तियों का भी तेजी से निजीकरण कर रही है ताकि लम्बे समय तक भारत की आर्थिक वृद्धि दर दुनिया की शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में अपना स्थान बरकरार रख सके। आम तौर परआर्थिक वृद्धि को समय के साथ मौजूदा स्टॉक में वस्तुओं और सेवाओं की कुल वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है जबकि आर्थिक विकास को एक निश्चित अवधि में किसी भी अर्थव्यवस्था में आये मात्रात्मक और गुणात्मक परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया जाता है। क्योंकि विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो कई सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारकों एवं संस्थाओं के परिवर्तन पर निर्भर करता है जो समय के साथ सामूहिक रूप से मानव जीवन के सभी पहलुओं में मात्रात्मक और गुणात्मक परिवर्तन लाता है।

लेकिन दुर्भाग्यवश देश के सभी क्षेत्रों और समुदायों में विकास की गति एक समान नहीं है कहीं कम तो कहीं अधिक है जिसको बहुत सावधानी पूर्वक मूल्यांकन और विशलेषण करने की आवश्यकता है और हमारी नीतिगत कमियों को पहचानने की आवश्यकता है ताकि उनमें सुधार लाया जा सके। हम उच्च आर्थिक वृद्धि दर का जश्न तो मना रहे हैं लेकिन क्या हम क्षेत्रीय आर्थिक वृद्धि दर और देश के आदिवासी क्षेत्रों और आदिवासी समुदायों के विकास के बारे में चिंतित हैं? क्योंकि ज्यादातर आदिवासी लोग अपने अजीविका के लिए दिन-रात संघर्ष कर रहे हैं। क्या हम उनकी प्रति व्यक्ति वास्तविक आय, प्रति व्यक्ति बुनियादी सुविधाएं, शैक्षणिक सुविधाओं की गुणवत्ता, कौशल की गुणवत्ता, स्वास्थ्य सुविधाओं की गुणवत्ता, उचित रोजगार के अवसर और उनके लोकतांत्रिक अधिकारों को बढ़ाने और सुरक्षित रखने के प्रति गंभीर हैं? दिखाई गयी यह तस्वीर उनकी सामाजिक-आर्थिक और अन्य स्थितियों के बारे में सब कुछ स्पष्ट रूप से दिखाती है। कैसे वे आर्थिक और सामाजिक विकास की मुख्यधारा से अभी भी कोशों दूर हैं और वे इसके लिए दिन-रात संघर्ष कर रहे हैं। इस तस्वीर से यह स्पष्ट है कि आर्थिक वृद्धि और आर्थिक विकास की गति के बीच कोई मजबूत संबंध नहीं है जोसरकार और नीति निर्माताओं के लिए चिंता का विषय होना चाहिए।

तो समस्या कहां है? उनके कमजोर आर्थिक विकास के लिए कौन जिम्मेदार हैं? क्या यह आर्थिक सिद्धांतों की समस्या है या आर्थिक नीतियों और नीति निर्माताओं की समस्या है? आजादी के सात दशकों के बाद भी क्यों सरकार और सरकार से सम्बंधित संस्थायें अभी तक उन्हें गुणवत्तापूर्ण बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध नहीं करा पा रही हैं और गैर-आदिवासियों की तरह उनकी वास्तविक प्रति व्यक्ति आय क्यों नहीं बढ़ा पा रही हैं? तो फिर उच्च आर्थिक वृद्धि और विकास के वास्तविक लाभार्थी कौन हैं? इस तस्वीर के जरिए कई सवाल उठते हैं। यह तस्वीर कुछ दिन पहले ली गई थी जब मैं मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के एक आदिवासी गांव (भाजीपानी) का सर्वेक्षण कर रहा था जो जिला मुख्यालय से लगभग 60 किलोमीटर दूर अमरवाड़ा तहसील में स्थित है। जब ये लोग अपनी बेटी की शादी की तैयारी में लगे हुये थे और आर्थिक स्थिति कमजोर होने की वजह से वे शादी का खर्च कम करने के लिए माहुल के पत्ते से पत्तल बना रहे

थे। वे जंगल से माहुल के पत्ते इकट्ठा करते हैं और रात मेंभोजन के बाद परिवार के सभी सदस्य एक जगह एकत्रित होकर पत्तल बनाते हैं। वे भोजन पकाने के लिए जलाऊ लकड़ी, देसी शराब बनाने के लिए महुआ के फूल और मंडप को सजाने के लिए जामुन, आम और पलाश की पत्तियों जैसे वन संसाधनों का उपयोग करके विवाह के बजट को कम करने का प्रयास करते हैं। संगीत के लिए वे स्थानीय बाजा और शहनाई का उपयोग करते हैं। लेकिन, धीरे-धीरे यह चलन बदल रहा है और वे शहरी संस्कृति का अनुसरण करते हुए कर्ज लेकर शादियों पर अधिक राशि खर्च कर रहे हैं।

यह देखा गया जा रहा है कि असमान विकास की प्रवृत्ति न केवल सामुदायिक स्तर पर बल्कि पूरे देश में क्षेत्रीय स्तर पर भी देखी जा सकती है। इन लोगों के लिए उचित नीतियां बनाने के लिए इसका बहुत सावधानी पूर्वक विश्लेषण करने और समझने की आवश्यकता है अन्यथा हम बढ़ती जीडीपी और प्रति व्यक्ति आय को जमीनी हकीकतों से नहीं जोड़ पाएंगे। जैसा कि आंकड़ों से पता चलता है कि हमारी अर्थव्यवस्था का सकल घरेलू उत्पाद 50 प्रतिशत से अधिक सेवा क्षेत्र पर आधारित है एवंलगभग 18 प्रतिशत का योगदान कृषि क्षेत्र का है। जबकि देश की लगभग आधी आबादी अभी भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से न केवल अपनी आजीविका के लिए बल्कि अपने सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए कृषि और कृषि संबंधी गतिविधियों पर निर्भर है। हालाँकि कौशल की कमी और औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में नौकरी के अच्छे अवसरों की कमी के कारणग्रामीण खेतिहर मजदूर स्थायी रूप से इन क्षेत्रों में स्थानांतरित नहीं हो पा रहे हैं जो सरकार के लिए एक चिंता का विषय होना चाहिए। क्योंकि इन लोगों के पास न तो कोई व्यावसायिक पृष्ठभूमि है और न ही आय के अन्य प्रमुख स्रोत हैं। वे आमतौर पर पिछड़े इलाकों और दूरदराज के गांवों में रहते हैं जहां अच्छा जीवन यापन करने के लिए बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। अधिकतर सरकारी योजनाएं स्थानीय, क्षेत्रीय और सामुदायिक स्तर पर बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने और नियमित रूप से अच्छे रोजगार के अवसर पैदा करने में विफल रही हैं जिसकी वजह से देश भर में आदिवासी क्षेत्रों से अवांछित और अस्थायी ग्रामीण प्रवास हो रहा है। सरकार गरीबों को घर बनाने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत राशि दे रही है, 80 करोड़ जनसँख्या को मुफ्त राशन दे रही है, पीएम सम्मान निधि के माध्यम से किसानों को 6000 रुपये और विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से गरीबों की मदद कर रही है। हालाँकि ये योजनाएँ स्थायी रूप से गरीबी उन्मूलन या ग्रामीण प्रवासन को नियंत्रित करने का स्थायी समाधान नहीं हैं। ये केवल गरीब लोगों के लिए अस्थायी आर्थिक सहायता के लिए हैं क्योंकि येयोजनायें जॉब मार्केट की डिमांड के अनुसार उनके कौशल में सुधार नहीं कर पा रहीं हैं और न ये नियमित रोजगार के अवसर पैदा कर पा रहीं हैं। आदिवासी लोग इसलिए गरीब नहीं हैं की उनके पास आय के कोई बड़े स्रोत नहीं हैं बल्कि वे इसलिए गरीब हैं क्योंकि उनके पास सामाजिक पूंजी, संस्थागत सहायता, व्यावसायिक पृष्ठभूमि और आवश्यक सुविधाएं नहीं हैं।जो उनके लिए स्थायी रोजगार के अवसर पैदा कर सकें और अपने समाज के वाहर भी एक सकारात्मक व्यवसायिक वातावरण बनाकर अपने विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक आर्थिक-सामाजिक पिछड़ेपन को दूर कर जीवन शैली में उचित सुधार कर सकें।

उन्हें केवल वित्तीय सहायता देने से उनके प्रबंधकीय कौशल और अन्य कौशल में सुधार नहीं हो सकता है। ऐसा देखा गया है कि जिन लोगों ने व्यवसाय चलाने या किराना दुकान खोलने के लिए बैंकों या किसी अन्य स्रोतों से ऋण लिया हैलेकिन अधिकांश लोग व्यवसाय चलाने में असफल रहे हैंऔर ऋण चुकाने में भी असफल रहे हैं क्योंकि उन्हें व्यवसाय का बुनियादी ज्ञान नहीं था। बिना प्रशिक्षण के यदि वे दुकान खोलते हैं तो कुछ समय बाद वे दुकान चलाने और प्रबंधन करने में असफल हो जाते हैं। इसलिएबिना प्रशिक्षण के उनके लिए किसी भी प्रकार का व्यवसाय चलाना काफी कठिन होता है। इसी प्रकार यदि हम किसानों की बात करें तो कुछ किसानों के पास पर्याप्त कृषि भूमि और सिंचाई सुविधाएं तो हैं लेकिन कृषि ज्ञान की कमी और समय पर आवश्यक सरकारी और संस्थागत सपोर्ट की कमी के कारण वे अपनी कृषि भूमि का उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में असमर्थ हैं। इन सभी कारणों की वजह से आमतौर पर देशभर के आदिवासी इलाकों में विकास की गति बेहद खराब और धीमी है जो एक नीतिगत समस्या है जिसका समाधान उचित नीति बना कर किया जाना चाहिए अन्यथा आने वाले समय में यह समस्या गंभीर रूप धारण कर सकती है।

चुनाव रिपोर्टिंग एवं संवैधानिक मूल्य-अंतिम

अजय बोकिल

लेखक पत्रकार हैं।

पर्यावरण की रक्षा भी अहम चुनावी मुद्दा होना चाहिए...

भारत की आजादी के अमृत काल में देश की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि हमारे यहां सत्ता परिवर्तन एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया और जन भागीदारी से होता है। इसलिए उसकी वैधता ज्यादा है। बीते सात दशकों में एक आम वोटर भी इतना परिपक्व तो हो ही गया है कि उसे पता है कि वह किसी उद्देश्य और किस काम के लिए वोट कर रहा है। इसीलिए कई बार लोकसभा और विधानभा के चुनावों में वोटर का रूझान अलग अलग दिखाई देता है। लेकिन इस मानसिक परिपक्वता को भी प्रलोभन की राजनीति और वादों से तोड़ने की कोशिश की जा रही है। यह संस्कृति मतदाता के विचार की स्वतंत्रता के मूलभूत अधिकार को बाधित करने वाली है। एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए इसे कतई जायज नहीं ठहराया जा सकता। लोक लुभावन वादों से सत्ता हासिल करना वास्तव में मतदाता के विवेक पर ताला डालकर सत्ता चुराने जैसा है।

चुनाव प्रक्रिया के दौरान प्रत्याशी चयन, उसका आधार, प्रचार अभियान की दिशा और दशा, राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र में किए जाने वाले वादे, चुनाव प्रचार में किया जाने वाला अंधाधुंध खर्च, प्रलोभन, प्रचार की शैली, चुनाव प्रत्याशी का वोटर के साथ व्यवहार, चुनाव जीतने के बाद अपने क्षेत्र के लोगों के साथ उसका रिश्ता, उसकी आर्थिक सम्पन्नता में होने वाले बदलाव भी मीडिया के लिए चुनाव रिपोर्टिंग का हिस्सा होने चाहिए।

हमारा संविधान देश की एकता अखंडता का पैरोकार है। कोई भी दल अथवा प्रत्याशी चुनाव में ऐसा प्रचार तो नहीं कर रहा है, जिससे देश की एकता अखंडता पर आंच आती हो, इस बात पर नजर रखना भी जरूरी है। अगर ऐसा है तो उसे जनता के सामने लाने में कोताही नहीं करनी चाहिए। संविधान के इन स्थापित मूल्यों के अलावा कुछ और बातें हैं, जिनका ध्यान रखना जरूरी है। पहला है पर्यावरण।

राजनीतिक दलों के घोषणा पत्र में पर्यावरण संरक्षण का स्थान गौण है। जबकि यह बहुत गंभीर वैश्विक समस्या है और समूची मानव जाति तथा पृथ्वी के अस्तित्व से जुड़ा मुद्दा है। अफसोस है कि इसको लेकर राजनीतिक दलों में कोई जागरूकता नहीं है और शायद जनता भी जो पर्यावरण विनाश के नतीजे भुगत रही है, सत्ता निर्धारण में इस बात को ज्यादा महत्व नहीं देती है। राजनीतिक दल राशन, नकदी, मकान आदि देने की बात तो करते हैं,लेकिन यह कोई नहीं कहता कि हम सत्ता में इतने लाख पेड़ प्राथमिकता के साथ लगवाएंगे और देश में वनो और पर्यावरण के विनाश को हर कीमत पर रोकेंगे। राजनीतिक दल जागेंगे भी तो तब जब पानी सर पर से गुजर जाएगा। मेट्रो शहरों में भयंकर जल संकट से इसकी शुरूआत हो चुकी है, कुछ सालो में यह छोटे शहरों और कस्बों तक फैलने वाला है।

चुनाव जैसी अहम लोकतांत्रिक प्रक्रिया में कुछ वर्षों से धार्मिक संतो, बाबाओं और डेरों की दखलंदाजी भी बढ़ी है। यह मतदाता के विवेक और विचार स्वातंत्र्य को कहीं न कहीं अवश्य प्रभावित करती है। लेकिन इससे भी ज्यादा चिंताजनक धर्म के नाम पर फैलाई जा रही अंधश्रद्धा है। चुनाव रिपोर्टिंग में ऐसे मामले को बेखौफ उजागर किया जाना चाहिए।

तीसरा संवैधानिक मूल्यों जेंडर समानता का है। बेशक राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है, लेकिन अभी भी वह उतनी नहीं है, जितनी कि होनी चाहिए। संसद ने महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण का बिल भले पास कर दिया हो, लेकिन व्यवहार में राजनीतिक दलों ने इस चुनाव में भी 20 फीसदी से ज्यादा टिकट शायद ही दिए हैं। इसी तरह मतदाताओं में भी महिलाओं की संख्या लगभग 49 फीसदी है। लेकिन इनमें से कितनी महिलाएं वोट डाल पाती हैं और कितनी स्वविवेक से वोट डाल पाती हैं, यह भी चुनाव रिपोर्टिंग में देखा जाना चाहिए। इसी तरह समाज के कमजोर वर्गों जैसे कि बूढ़ों, दिव्यांगों को किस तरह से वोट करने दिया जाता है, दिया जाता भी है या नहीं, इस पर भी बतौर रिपोर्टर नजर रखने की जरूरत है। लोग अपने मताधिकार का प्रयोग बेखौफ होकर करें, अपने विवेक से करें, बिना किसी प्रलोभन के करें, इस पर मीडियाकर्मी होने के नाते हमे बारीक नजर रखनी चाहिए।

चौथा मुद्दा राजनीति में अपराधियों की बढ़ती भागीदारी का है। इस चुनाव में भी कई ऐसे प्रत्याशी खड़े हैं, जिन पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। ऐसे प्रत्याशियों की कार्यशील और नीयत पर भी बतौर चुनाव रिपोर्टर हमे पैनीनजर रखनी चाहिए। क्योंकि दरअसल अपराधियों के राजनीति में आने और उच्च पदों पर पदासीन होने से लोकतंत्र की शुचिता और निष्पक्षता के मूल्य का ही हरण हो गया है। इसे जितना नियंत्रित किया जा सकता है, करना चाहिए।

चुनावों में राजनेताओं की भाषा और अभिव्यक्ति का गिरता स्तर बड़ी चिंता का विषय है। मीडिया कर्मी होने के नाते हमे इसकी आलोचना करने और भाषा का स्तर सुधारने पर जोर देना चाहिए। क्योंकि स्वस्थ लोकतंत्र में निम्नस्तरीय भावाभिव्यक्ति का कोई स्थान नहीं है। चुनाव जितने निष्पक्ष होने चाहिए, वैसे ही निष्पक्ष दिखने और उतने ही शालीन भी होने चाहिए। यह व्यक्ति के साथ साथ राजनीतिक दल और समूचे समाज की गरिमा को कायम रखने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। आज कुछ दूसरे लोकतांत्रिक देश हमारी चुनाव प्रक्रिया और नीयत को लेकर सवाल उठा रहे हैं, जोकि नहीं होना चाहिए।

एक बड़ा खतरा अब चुनाव में फेक न्यूज और झूठे प्रचार का है। प्रौद्योगिकी ने यह बहुत आसान कर दिया है कि आप सौ फीसदी झूठ और बनावटी खबरें व सूचनाएं थोक में प्रसारित करें। यह निष्पक्ष चुनाव की संविधान की भावना के विपरीत और मतदाता को भ्रमित कर किया जाने वाला दुर्भावनापूर्ण कृत्य है। जिम्मेदार मीडिया होने के नाते हमे ऐसे प्रयासों का गंभीरता के साथ फैक्ट चैक करके असलियत मतदाता को बतानी चाहिए।

एक और महत्वपूर्ण संवैधानिक मूल्य है, बंधुता। लोकतंत्र में चुनाव केवल सत्ता के कर्णधारों का मतदान के माध्यम से चयन है। सत्ताधीश जनता के सेवक हैं न कि मालिक। वो अपने संकीर्ण राजनीतिक हितों के लिए लोगों में फूट डालकर अपना उल्लू सीधा करें, यह कतई अस्वीकार्य होना चाहिए। देश में भाईचारा रहेगा तो ही लोकतंत्र कायम रहेगा। यह भाईचारा और बंधुता धार्मिक, सामाजिक, जातीय, साम्प्रदायिक, सामुदायिक, क्षेत्रीय और भाषाई स्तर पर होनी चाहिए। बंधुता संविधान का बुनियादी मूल्य है। केवल सत्ता हासिल करने के लिए इस मूल्य से छेड़छाड़ की किसी भी कोशिश को उजागर करना और उसकी आलोचना करना मीडिया काम होना चाहिए।

चुनाव तमाम लोकतांत्रिक देशों का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक पर्व होता है। क्योंकि यह जन द्वारा नियंत्रित होता है। हमारे देश में प्रेस परिषद ने चुनाव रिपोर्टिंग की कुछ गाइड लाइन्स तय की हैं। प्रेस परिषद ने मीडिया से अपेक्षा की है कि वह चुनाव की वस्तुनिष्ठ और जिम्मेदार रिपोर्टिंग करे। इसका आशय यही है कि मीडिया को पार्टी बनकर काम नहीं करना चाहिए। चुनाव रिपोर्टिंग में संवैधानिक मूल्यों का पालन कैसे हो, इस बारे में कुछ विधिवेत्ता और पत्रकारों की संस्थाओंने भी प्रयास किए हैं। रिपोर्टर्स कमिटी फॉर फ्रीडम ऑफ द प्रेस ने तो इलेक्शन लीगल गाइड भी जारी की है।

कहते हैं कि वोट के माध्यम से जनता में अपने देश के मालिक होने का बोध जागता है। मतदान के अधिकार की गारंटी 1948 के यूएन मानवाधिकारों और 1966 की नागरिक और राजनीतिक अधिकारों की अंतरराष्ट्रीय प्रतिज्ञा में भी है। इसलिए ज्यादा से ज्यादा से लोग मतदान की प्रक्रिया में भाग लें, इसके लिए उन्हें जागरूक और प्रेरित करना मीडिया की नैतिक और लोकतांत्रिक जिम्मेदारी है। यह सभी का राष्ट्रीय कर्तव्य है। क्योंकि लोकतंत्र है, इसीलिए संविधान है और संविधान है, इसीलिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी है। (समाप्त)

दृष्टिकोण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

खुशी के लिए किसी बड़े कारक की जरूरत नहीं

सुख वह नहीं है जो आपके पास है। या वह भी नहीं है जो नहीं है। है और नहीं है के बीच सुख नहीं होता। सुख तो अपनी स्थिति में लय हो जाने, अपनी स्थिति में डूब जाने और जो है उसे जीने में सुख होता है। सुख सुंदर स्थिति में जीने की गति है। जीना ही सुख है । सुख में होना सुख नहीं होता। सुख में होते हुए भी बहुत सारे लोग मिल जाएंगे जिन्हें देखकर लगेगा कि इनके ऊपर कौन सा मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है । कहीं से उल्लास व उत्साह नहीं झलकेगा, एक बोझ की तरह उपस्थिति बनाए पड़े मिलेंगे। इस तरह के लोग वास्तव में कभी भी उपस्थित नहीं होते, एक तटस्थता व दूरी बनाकर चलते हैं - इन्हें देखकर ही खुशी भाग जाती है या ये लोग खुशी को अपने आसपास फटकने नहीं देते या यह भी कह सकते हैं कि इनके लिए खुशी खुश होना नहीं होता, ये तो बस पड़े रहना चाहते हैं। बस पड़े रहते हैं। क्या करना है पता नहीं। क्यों कुछ करें दुनिया कहां रूक रही है। कुछ करें या न करें। दुनिया को कहां फर्क पड़ता। बस इसी अंदाज में ये चलते हैं।

खुशी तभी मिलती है जब आपका मन साफ होता है कोई उधेड़बुन नहीं, आगे पीछे ज्यादा सोचना नहीं। जो है वह काफी है, संतोषी मन हो तो खुशी आप से आप दौड़ी चली आती है। खुशी के लिए किसी बड़े कारक की जरूरत नहीं होती है। छोटी छोटी उपलब्धियां ही काफी होती हैं। खुश होने के लिए अपनी हर गतिविधि को उल्लास के साथ जीना सीखें। हर बात को, हर संदर्भ को जीना शुरू करें...जब जीते हैं तो खुशियां सहज ही दौड़ी चली आती है।

संसाधनों की भीड़ या भौतिक संसाधन सुख को जीवित नहीं करते न ही सुखकारक स्थिति बनाते। सुख के लिए जरूरी नहीं है कि अथाह संपत्ति हो या अनावश्यक शक्ति संसाधन, सुख की स्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि आप कैसे अपनी स्थिति में रहते हैं और आपकी उपस्थिति आपकी स्थिति के साथ कितनी है यह दशा ही आपके सुख का कारक बनती है। कुछ लोग बहुत थोड़े में संतुष्ट और खुश मिलते हैं उन्हें कुछ भी अनावश्यक नहीं चाहिए। जो है, जितना है वह काफी है। इस जीवन को देखना जानना हो तो एक से दो पीढ़ी पीछे का जीवन उठा कर देख लीजिए, वे लोग कभी भी अनावश्यक का बोझ नहीं पालते थे। जो है जितना है वह बहुत है। यह भाव लोगों को खुशी देता था। दो जोड़ी धोती कुर्ता में खुश रहते थे और आज लोग हैं कि पूरी आलमारी भरी है पर क्या पहने समझ में ही नहीं आता। भागादौड़ी मचायें हैं । भरे जा रहे हैं घर संसाधनों से...। हर बात के लिए, मशीन और रिमोट। बटन पर

निर्भर हो गये हैं । खुद कुछ नहीं करना फिर खुशी कहा से आयेगी? पड़े-पड़े आलसी जीव खुशी खोजते हैं। अब भला आलस के घर में खुशी के लिए कहां जगह होगी। भर लीजिए दुनिया भर की चीजें कुछ नहीं होने वाला...यदि वास्तविक संसार, वास्तविक खुशियां और जिंदगी नहीं है तो खुश भला कहां से होंगे? खुशी कहीं बाहर नहीं होती खुशी अपने ही भीतर अपने अंदर होती है। यूं ही भटकते रहते हैं । पूरी दुनिया भर लीजिए कुछ नहीं होने वाला है। यदि आप स्वयं खुश नहीं रह सकते तो भला कौन सी स्थिति है जो खुशी लायेंगी। अपनी स्थिति और अपने सच को जीते हुए अपनी खुशी को जीना चाहिए। पिछली पीढ़ी के लोग केवल अपनी खुशी के लिए नहीं जीते थे। अपनी खुशी में अन्य को, अपने आसपास की दुनिया को, पड़ोसी, परिवार जन सभी को शामिल कर खुश होते थे। इनके लिए खुशी अकेले की नहीं होती थी। एक दूसरे के लिए कुछ करना, सहयोग का भाव रखना, किसी के काम आ जाना, किसी के लिए यदि कुछ कर दिया तो कोई अपेक्षा नहीं, सबके साथ चलने में जीवन की, अपनी उपस्थिति की सार्थकता समझते थे। अकेले पड़ जाना, या अकेले हो जाना इनकी नियति नहीं थी ये लोग हर बात में साथीपन पारिवारिक भाव और लगाव को महसूस करते थे। इनकी खुशी दूसरे के खुश होने के साथ खुश होने में भी थी। ये केवल खुद ही खुश होना नहीं जानते थे बल्कि औरों को खुश कर खुश होते थे। एक वास्तविक आनंद की स्थिति को जीते थे। ऐसे लोग कभी भी दुखी नहीं मिलते ये दूसरे की थाली में घी देखकर अपनी रोटी फेंक नहीं देते वल्कि अपनी रोटी में स्वाद और रस लेते हैं। हर स्थिति में मगन रहते हैं। इनके सुख का लेवल कोई और नहीं ये खुद तय करते हैं। जब आप अपना रास्ता बनाते हैं, अपना कार्य खुद करते हैं संसार को अपने ढ़ंग से समझते हैं तो साफ सी बात है कि आप खुश होंगे और आपकी हर गतिविधि आपके हिसाब से आपके मन से होगी तो स्वाभाविक सी बात है कि दुःख या सुख का कारक कोई बाह्य सूत्र न होकर आप स्वयं होंगे और स्वयं जब हम कुछ करते हैं तो उसका पूरा रंग पूरा रस और स्वाद हम स्वयं चखते हैं। यह दशा स्वाभाविक रूप से खुशी का कारक बन जाती है। जीवन सहज और स्वाभाविक बल से चलता है उसे बाह्य बल से चलाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। जो भी इस तरह की कोशिश करते हैं वो जीवन को या तो समझते नहीं या अपने जीवन में संसार भर का जीवन देखने लगते हैं। संसार भर को देख लीजिए पूरा संसार घूम जाइये इससे कुछ भी फर्क नहीं पड़ता। यदि आप स्वयं अपनी दुनिया अपने संसार को सही ढ़ंग से नहीं समझते हैं तो कोई भी क्या कर सकता। मानव जीवन की सार्थकता ही इस बात में है कि अपनी उपलब्धियों को समाज की उपलब्धि से जोड़ते हुए देखें। केवल अपनी खुशी का कारक न बने बल्कि अन्य की खुशी का भी कारक बने, जब इस तरह सोचते हुए चलते हैं तो खुशी मिलती भी है और अन्य को भी खुश होने का अवसर मिलता है। हमारे कारण अन्य भी खुश हो लेते। यह आनंद की उपस्थिति का भी कारक बन जाते हैं।

नवरात्रि पर्व पर निकली भव्य चुनरी यात्रा

बाबई से शुरू होकर जाएगी हिवरा देवी मंदिर

बैतूल। मंगलवार से चैत्र नवरात्र की शुरूवात हुई है। नवरात्र पर्व को लेकर धार्मिक आयोजन भी बढ़ चढ़कर किए जा रहे हैं। आज ग्राम बाबई से भव्य चुनरी यात्रा का शुभारंभ किया गया। पूजा अर्चना के साथ ही चुनरी यात्रा शुरू हुई। इस चुनरी यात्रा का आयोजन समाजसेवी शैलेंद्र कुंभारे के द्वारा किया गया। चुनरी यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए और 100 से अधिक वाहन भी यात्रा में शामिल थे। बैतूल पहुंचने पर चुनरी यात्रा का जगह-जगह स्वागत किया गया। शहर में चुनरी यात्रा शिवाजी चौक पर पहुंची, जहां शिवाजी प्रतिमा के समक्ष पुष्प अर्पित किए गए। यहां से बैतूलगंज होते हुए चुनरी यात्रा भाजपा कार्यालय पहुंची, जहां भाजपा प्रत्याशी दुर्गादास उइके, नगर पालिका बैतूल अध्यक्ष श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, भाजपा नेता विकास मिश्रा, संजू सोलंकी, राजा सूर्यवंशी, मुन्ना मानकर सहित अन्य लोगों ने चुनरी यात्रा का भवय स्वागत किया। इसके बाद चुनरी यात्रा बडोरा चौक, कोलगांव, आठनेर होते हुए देवी मंदिर हिवरा पहुंचेगी और वहां पर माता रानी को चुनरी अर्पित की जाएगी।

नागपुर मंडल के डीआरएम ने पांढुर्णा, मुलताई और बैतूल स्टेशनों का किया निरीक्षण

बैतूल। नागपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) मनीष अग्रवाल ने मंगलवार 9 अपैल को पांढुर्णा, मुलताई और बैतूल स्टेशनों का व्यापक निरीक्षण किया, जिसमें यात्री सुविधाओं, माल शेड विकास और चल रही स्टेशन विकास परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया। निरीक्षण के दौरान डीआरएम मनीष अग्रवाल ने पांढुर्णा, मुलताई और बैतूल स्टेशनों पर चल रही परियोजनाओं और गुड्स शेड विकास की प्रगति पर विशेष जोर दिया। उनका प्राथमिक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि ये परियोजनाएं यात्री सुविधाओं, पहुंच और समग्र स्टेशन सौंदर्यशास्त्र को बढ़ाने के लिए कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से आगे बढ़ रही हो। निरीक्षण के दौरान सचिन गनेर, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (उत्तर) और अमन मित्तल वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक डीआरएम के साथ थे।

किला खंडारा में विराजित होगी माताकाली की समस्वरूप प्रतिमा

मूर्तिकार आर सुनील प्रजापति ने माताकाली की प्रतिमा का किया निर्माण

बैतूल। इस चैत्र नवरात्रि में किला खंडारा में माता काली की सम स्वरूप प्रतिमा स्थापित की जाएगी। मूर्तिकार आर सुनील प्रजापति ने माता काली की प्रतिमा का निर्माण किया। प्रतिमा का निर्माण करते समय, मूर्तिकार ने उत्कृष्ट कौशल और ध्यान से उसके साथ जीवंतता और भव्यता को जोड़ा। यह मूर्ति न केवल धार्मिक महत्व को उजागर करती है, बल्कि संस्कृति के आधार में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस कलाकृति को देखने के लिए कई श्रद्धालु किला खंडारा जा रहे और आतुरता से द्रशन कर रहे है। यह मूर्ति समृद्धि, शक्ति, और साहस की प्रतीक है।

त्रिवेणी गौशाला में गौ-रक्षा का लिया संकल्प

खाद्य सामग्री पन्नी में ना फेंके

बैतूल। गुड़ी पाड़वा चैत्र नवरात्र के पावन पर्व पर मप्र शासन की मंशानुसार त्रिवेणी गौशाला में गौ पूजन, गौ ग्रास के रूप में खिचड़ी, हरा घांस, खिलाया गया और उपस्थित गौप्रेमियों ने गौरक्षा का संकल्प लिया। इस मौके पर समिति ने सभी से अनुरोध किया कि वह खाद्य सामग्री पन्नी में भरकर नहीं फेंके। जिसके कारण गौमाता खाद्य सामग्री पन्नी सहित खा लेती है और उनकी मौत तक हो जाती है। समिति के भूसादान आग्रह के तहत अनिल यादव कोदारोटी द्वारा एक ट्राली भूसा गौशाला पहुंचाकर दान दिया। इस अवसर पर पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ.यशपाल चौहान, सहायक पशु चिकित्सा अधिकारी कमलेश जावलकर, गौशाला समिति के कोषाध्यक्ष रामराव वराठे, संचालक दीपक कपूर, मनोज वर्मा, अनिल पंवार, उमेश मालवीय, कैलाश पाल, परमानंद सरले, रामकिशोर देवासे, महेश पंवार, कृष्णा सरले सहित अनेक गौ सेवक मौजूद थे।

संत महात्माओं ने किया मां चामुंडा सेवा समिति सेवा पंडाल का शुभारंभ

9 दिनों तक महायज्ञ, कन्या भोज एवं फरियाली छाछ का सेवा पांडाल से किया जाएगा वितरण

देवास। चैत्र नवरात्र महापर्व पर टेकरी सीढ़ी मार्ग उदासीन मठ पर मां चामुंडा सेवा समिति द्वारा 9 दिनों तक महायज्ञ, कन्या भोज एवं मां चामुंडा मां तुलजा भवानी के दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालुओं के लिए फरियाली छाछ का निःशुल्क वितरण किया जाएगा। सेवा पंडाल का शुभारंभ मंगलवार को टेकरी सीढ़ी मार्ग स्थित उदासीन मठ पर देवस्थान प्रबंध समिति अध्यक्ष एवं कलेक्टर ऋषव गुप्ता के मार्गदर्शन

में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की जिला संचालीका प्रेमलता दीदी, संत पूर्णानंद जी महाराज के आतिथ्य में किया गया। नवरात्रि में प्रतिदिन 9 दिनों तक सुबह 9 से 11 बजे तक महायज्ञ के बाद 11 से 2 बजे तक कन्या भोज एवं 11 से 5 बजे तक सेवा पंडाल पर फरियाली छाछ का वितरण सीडी मार्ग पर किया जाएगा। श्रद्धालुओं की प्यास बुझाने के लिए 9 दिनों तक ठंडे पानी की प्याऊ भी लगाई गई है। प्रतिदिन 9 दिनों तक महायज्ञ यज्ञाचार्य पंडित देवी शंकर तिवारी के आचार्यत्व में होगा। समिति अध्यक्ष राजेश गोस्वामी ने बताया कि पूजा मिल्क सेंटर की ओर से छाछ की व्यवस्था रहेगी। इस पुण्यमय अवसर पर एडीएम, एसडीएम, तहसीलदार, मां चामुंडा सेवा समिति पदाधिकारी राजेश गोस्वामी, नरेंद्र मिश्रा, इंदर सिंह गौड़, नारायण व्यास, रामेश्वर जलोदिया, उम्मेद सिंह राठौड़, ओमप्रकाश पटेल, शशिकांत गुप्ता, मुरलीधर पांचाल, शिवनारायण पाठक, बीड़ी रावल, राधेश्याम बोडाना,मूलचंद चौधरी, मात्र शक्तियों प्रेमलता चौहान, कला अग्रवाल, देव कुंवर राठौर, मंजू जलोदिया, कला तंवर, सुधा सोलंकी, हीरामणि पांडे, संगीता जोशी,सहित सामाजिक एवं धार्मिक संस्था पदाधिकारी उपस्थित थे।

खण्डेलवाल समाज की महिलाओं ने मनाया गणगौर पर्व

बैतूल। खण्डेलवाल समाज की महिलाओं ने गणगौर पर्व धूमधाम से मनाया। इस दौरान पूजा पाठ के बाद प्रतियोगिता भी आयोजित की गई, जिसमें महिलाओं ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया और विजयी महिलाओं को पुरस्कार भी वितरित किए गए। गौरतलब है कि खण्डेलवाल समाज की महिलाओं के द्वारा प्रतिवर्ष गणगौर पर्व मनाया जाता है और इसकी तैयारियां भी पहले से की जाती हैं। सिविल लाइन्स स्थित गार्डन में गणगौर पर्व को लेकर कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए बिंदोरा निकाला। गणगौर पर्व को लेकर बताया जाता है कि गण मतलब भगवान शिव और गौर मतलब माता पार्वती, इन दोनों को मिलाकर गणगौर शब्द बनता है। इसे इसर और गौरा भी कहा जाता है। इस पर्व में कुंवारी लड़कियां मनपसंद वर पाने के लिए कामना करती हैं, वहीं विवाह महिलाएं चैत्र शुक्ल तृतीया को गणगौर पूजन तथा व्रत कर अपने पति की दीर्घायु की कामना करती हैं। होलिका दहन के दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से चैत्र शुक्ल तृतीया तक 18 दिनों तक गणगौर पर्व चलता है। गणगौर व्रत गौरी तृतीया के दिन यानी चैत्र शुक्ल तृतीया को किया जाता है। इस व्रत का राजस्थान में बड़ा महत्व है।

गणगौर व्रत करने वाली महिलाओं का कहना है कि शादी के उपरांत नवविवाहिता पहली बार गणगौर अपने मायके में मनाती हैं। बाद में प्रतिवर्ष वो अपने ससुराल में ही गणगौर का पूजन करती हैं। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को गणगौर तीज मनाई जाती है। यह तिथि चैत्र मास की नवरात्रि में आती है और इसे अखण्ड सुहाग का पर्व माना जाता है। खण्डेलवाल समाज की महिलाओं के द्वारा मनाए गए गणगौर पर्व के दौरान पूजा, पाठ होने के पश्चात महिलाओं के बीच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और उन्हें पुरस्कार एव्म प्रसादी भी वितरित किए गए।

अग्रवाल समाज की महिलाओं ने मनाया गणगौर पर्व

बैतूल। अग्रवाल समाज की महिलाओं ने गणगौर पर्व धूमधाम से मनाया। श्री अग्रसेन भवन गंज में बिंदोरा का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसके साथ विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई, जिसमें महिलाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और विजयी महिलाओं को पुरस्कार भी वितरित किए गए। गौरतलब है कि अग्रवाल समाज की महिलाओं द्वारा प्रतिवर्ष गणगौर पर्व मनाया जाता है और इसकी तैयारियां भी पहले से की जाती हैं। श्री अग्रसेन भवन बैतूल गंज में गणगौर पर्व को लेकर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए बिंदोरा निकाला।

अग्रवाल समाज की महिला अध्यक्ष श्रीमती मंजू गर्ग ने गणगौर पर्व को लेकर बताया कि गण मतलब भगवान शिव और गौर मतलब माता पार्वती, इसे इसर और गौरा भी कहा जाता है। अग्रवाल समाज की महिलाओं के द्वारा मनाए गए गणगौर पर्व के दौरान पूजा, पाठ होने के पश्चात महिलाओं के बीच प्रतियोगिताओं का आयोजन और उन्हें पुरस्कार वितरित किए गए। साथ ही स्वल्पाहार की व्यवस्था भी की गई।

कोतवाली पुलिस द्वारा अवैध शराब परिवहन पर की बड़ी कार्यवाही

103 लीटर अवैध शराब व टवेरा वाहन जप्त

बैतूल। लोकसभा चुनाव के लिए लागू आचार संहिता के मद्देनजर चुनाव शाँति पूर्ण सम्पन्न कराने के लिए अवैध शराब पर अंकुश लगाने के लिए जिले में अवैध शराब की धर पकड हेतू वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा समस्त थाना प्रभारी को निर्देशित किया गया है। थाना कोतवाली अंतर्गत चौकी खेड़ी बैतूल द्वारा अवैध शराब पर बड़ी कार्यवाही करते हुये 8 अप्रैल 2024 को बैतुल इंदौर हाइवे में एक सन्देही वाहन टवेरा वाहन क्रमांक 0368 को मुखबिर की सूचना पर घेरा बंदी कर चैक करने पर टवेरा वाहन में 11 पेटी बियर व एक प्लास्टिक बोरी मे 98 नग क्वार्टर देशी शराब कुल 103 लीटर पाए जाने पर पुलिस द्वारा वाहन में रखी शराब

को जप्त किया कर लिया गया। 8 अप्रैल 2024 को पुलिस को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई थी कि एक सफेद रंग की टवेरा वाहन मे अवैध शराब भरकर बैतूल से चिचोली तरफ जा रही है। मुखबिर की सूचना पर विश्वास कर तत्काल थाना प्रभारी कोतवाली देवकरण डेहरिया द्वारा खेडी सावलीगढ पुलिस चौकी को घेराबन्दी कर उक्त वाहन को पकडने हेतू कहा गया था। जो पुलिस चौकी खेडी सावलीगढ के स्टाफ द्वारा फोरलेन हाईवे पर नाकेबंदी की गई जो एक सफेद टवेरा वाहन को रोकने पर वाहन चालक द्वारा वाहन को तेजी से भगाकर अखतवाडा तरफ़ ले गया जो पुलिस द्वारा पीछा कर घेरा बंदी कर कच्चे रास्ते मे वाहन को पकडा गया टवेरा के चालक से नाम ओर पूछने पर अपना नाम जीतेन्द्र पिता जयराम कवडे निवासी चूनागोसाई बताया जिसको हिरासत मे लिया गया है। टवेरा क्रमांक 0368 की तलाशी लेने पर टवेरा मे 11 पेटी कागज के कार्टून मे बियर एँव एक सफेद प्लास्टिक की बोरी मे 98 नग मिले। जो कुल 103 लीटर शराब किमती 27,350 रूपये व टवेरा वाहन किमती करीबन 3.5 लाख रूपये की जप्त किया गया। आरोपी जितेन्द्र ने बताया आरोपी गणेश धुर्वे निवासी धनियाजाम की शराब टवेरा में थी जो कोसमी से शराब धनियाजाम ले जाने को बोलकर ड्राइवर को रवाना किया था। आरोपियों के विरुद्ध अपराध क्रमांक 393/24 धारा 34(2) आबकारी अधिनियम का पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया जाकर अग्रिम विवेचना की जा रही है।आरोपी गणेश की तलाश की जा रही है जिसे शीघ्र गिरफ्तार कर लिया जाएगा। उक्त कार्यवाही अनु अधिकारी पुलिस बैतुल सुश्री शालिनी परस्ते के मार्ग निर्देशन में उप निरीक्षक इरफान कुरैशी प्र आर 677 दीपक ,आर 83 अनिल और सैनिक महादेव की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

कैला देवी मंदिर उत्सव समिति ने सिविल लाइन चौराहे पर श्री राम कथा के आमंत्रण पत्र बांटे

देवास। हिंदू नव वर्ष विक्रम संवत 2081 गुड़ी पड़वा के पावन पर्व पर कैला देवी मंदिर समिति के संयोजक रायसिंह सेंधव के नेतृत्व में समिति के पदाधिकारी दीपक गर्ग,ओ पी तापड़िया, रमन शर्मा, मदन सिंह धाकड़, हितेश गर्ग, अखिलेश दवंडे, मोहन श्रीवास्तव, गरिमा श्रीवास्तव, वीणा महाजन, प्रमिला मिश्रा, दिनेश साखला, सहित अनेक मातृ शक्ति एवं कार्यकर्ताओं ने राहगिरो को मंगल तिलक लगाकर गुड़ धनिया का प्रसाद देकर नव वर्ष की शुभकामना दी एवं 15 से 21 अप्रैल तक कैला देवी मंदिर मिश्रीलाल नगर में साध्वी ऋतम्भरा जी द्वारा होने वाली श्री राम कथा का आमंत्रण पत्र देकर कथा श्रवण करने एवं आयोजन को सफल बनाने की अपील की। उक्त जानकारी समिति के मीडिया प्रभारी चेतन उपाध्याय ने दी।

सांईखेड़ा पुलिस ने हत्या के आरोपी को किया गिरफ्तार

जमीनी विवाद पर भाई, भाभी और भतीजे ने लाठियों से पीट-पीट कर की थी हत्या

बैतूल। सांईखेड़ा पुलिस को सूचना मिली कि सांईखेड़ा थाना क्षेत्र अंतर्गत आने वाले ग्राम जावरा में एक व्यक्ति संदेहास्पद अवस्था में पड़ा हुआ है। सुचना कि तस्दीक पर ग्राम जावरा में किशोरी उर्फ़ तोब्या के खेत मे मंसू पिता तुकाराम उईके उम्र 48 साल निवासी ग्राम जावरा का शव पड़ा हुआ मिला शव के शरीर पर आई चोटों से प्रथम द्रष्ट्या मामला मारपीट से हत्या कर देने का पाया जाने से मौके पर उपस्थित मृतक की लडकी निकिता पिता मंशु उईके उम्र 20 वर्ष निवासी ग्राम जावरा ने बताया कि मेरे पिता मंशु का खेत में बनी झोपड़ी हटाने को लेकर बड़े पिताजी किशोरी उर्फ तोब्या उईके, बड़ी मां सुमन उईके एवं चचेरे भाई मुकेश उईके से वाद विवाद हुआ था, जो आरोपीगण द्वारा लाठी डंडे से मारपीट कर मंशू उइके की हत्या कर देना बताया था, खेत पर बनी झोप?ी हटाने को लेकर हुए वाद-विवाद में हत्या उसी के भाई, भाभी और भतीजे द्वारा की गई। जो फरियादी निकिता उईके की रिपोर्ट पर आरोपी किशोरी उर्फ तोब्या उईके सुमन उईके मुकेश उईके तीनों निवासी ग्राम जावरा के विरुद्ध अपराध क्रमांक 121/ 24 धारा 302, 201 ,34

भादवि का कायम कर विवेचना में लिया गया उपयुक्त आरोपीगण घटना दिनांक से ही फरार थे जिनकी अति शीघ्र तलाश कर गिरफ्तारी हेतु वरिष्ठ अधिकारी द्वारा आदेश निर्देशित किया गया थाना सांईखेड़ा पुलिस द्वारा टीम गठित कर अलग-अलग क्षेत्र में आरोपियो की तलाश की जा रही थी तभी सूचना प्राप्त हुई कि आरोपी गण उनके निवास स्थान पर जावरा में आए हुए हैं। थाना पुलिस द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी आरोपियों को उनके निवास स्थान ग्राम जावरा से गिरफ्तार किया गया। जिन्हें न्यायालय के समक्ष पेश कर जेल दाखिल किया गया।

उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी सांईखेड़ा निरीक्षक मुकेश ठाकुर उप निरीक्षक पूनम चंद साहू, प्रधान आरक्षक 529 दिलीप झडबड़े, प्रधान आरक्षक 47 राजकुमार धुर्वे, प्रधान आरक्षक 25 विनय जायसवाल, आरक्षक 603 विनोद साहू, आरक्षक 410 अविनेश एवं प्रधान आरक्षक चालक 282 रविंद्र नागले सैनिक 284 चंद्रभान सोनारे की अहम भूमिका रही।

मतदान से संबंधित जानकारी विभिन्न माध्यमों से मतदाता तक पहुंचाए : ऑब्जर्वर ठाकुर

बैतूल। लोकसभा निर्वाचन 2024 के निष्पक्ष एवं पारदर्शी निर्वाचन के लिए आवश्यक है कि मतदान से संबंधित आयोग के दिशा-निर्देशों को मतदाताओं तक पहुंचाए। बैतूल संसदीय क्षेत्र के सामान्य आब्जर्वर प्रदीप कुमार ठाकुर ने यह बात जन प्रतिनिधियों और प्रत्याशियों के साथ निर्वाचन पद्धति पर चर्चा के दौरान कही। इस अवसर पर जिला निर्वाचन अधिकारी नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, उप जिला निर्वाचन अधिकारी मकसूद अहमद भी उपस्थित थे।

उप जिला निर्वाचन अधिकारी ने प्रतिनिधियों को बताया कि मतदाता परिचय पत्र के अलावा 12 अन्य दस्तावेज ऐसे है जिनमें से किसी एक के भी दिखाने पर मतदान किया जा सकेगा। श्री अहमद ने बताया कि आधार कार्ड, मनरेगा, जॉब कार्ड, बैंक अथवा पोस्टआफिस की फोटोयुक्त पास बुक, श्रम मंत्रालय द्वारा जारी हेल्थ इंश्योरेंस का स्मार्ट कार्ड, ड्रायविंग लायसेंस, पेन कार्ड, आरबीआई

द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड, इंडियन पासपोर्ट, पेंशन प्रपत्र फोटो सहित केन्द्र अथवा राज्य शासन विभागीय आई कार्ड, विधायक, सांसदों को जारी परिचय पत्र, यूनिक डिसेबिलिटी (यूडीआईडी)कार्ड होने पर मतदान किया जा सकेगा।

रेण्डमाईजेशन के अंतर्गत संसदीय क्षेत्र के 1581 पोलिंग स्टेशन के लिए न्यूनतम बैलेट यूनिट 1581 का 20 प्रतिशत 315 यूनिट आरक्षित रखते हुए 1896 बैलेट यूनिट आवंटित की गई। वहीं पोलिंग स्टेशन के लिए न्यूनतम 1581 कंट्रोल यूनिट का 20 प्रतिशत 315 यूनिट के साथ 1896 कंट्रोल यूनिट आवंटित की गई। व्हीव्हीपीएटी 30 प्रतिशत आरक्षण के साथ 2053 व्हीव्हीपेट आवंटित की गई। इनमें सर्वाधिक बैलेट यूनिट घोड़ाडोंगरी में 73 और न्यूनतम बैलेट यूनिट आमला में 55 आवंटित की गई। कंट्रोल यूनिट सर्वाधिक घोड़ाडोंगरी में 438, न्यूनतम आमला में 331 और व्हीव्हीपेट घोड़ाडोंगरी में सर्वाधिक 474 और न्यूनतम 358 आमला विधानसभा क्षेत्र में आवंटित की गई।

निर्वाचन संबंधी प्रतीक चिन्ह वितरित किए जाने के पश्चात कलेक्ट्रेट सभागार सोमवार को आयोजित इस बैठक में भाजपा से बसंत माकोड़े, कैलाश धोटे, पवन यादव, कांग्रेस से हेमंत वागद्रे, देवेन्द्र वाद्य, आम आदमी पार्टी से शैलेष वाईकर, बसपा से जीआर पटेल, अमर सिंह खातरकर उपस्थित थे।

नवरात्रि पर्व पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक पत्रकार हैं।

नौ शक्तियों का मिलन पर्व है नवरात्रि

भारतीय समाज में नवरात्रि पर्व का विशेष महत्व है, जो आदि शक्ति दुर्गा की पूजा का पावन पर्व है। नवरात्रि के नौ दिन देवी दुर्गा के विभिन्न नौ स्वरूपों की उपासना के लिए निर्धारित हैं और इसीलिए नवरात्रि को नौ शक्तियों के मिलन का पर्व भी कहा जाता है। चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से नवरात्रि की शुरुआत होती है और इस बार नवरात्रि पर्व की शुरूआत 9 अप्रैल से हो चुकी है, जिसका समापन रामनवमी के दिन 17 अप्रैल को होगा। प्रतिपदा से शुरू होकर नवमी तक चलने वाले नवरात्र नवशक्तियों से युक्त हैं और हर शक्ति का अपना-अपना अलग महत्व है। नवरात्र के पहले स्वरूप में मां दुर्गा पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के रूप में विराजमान हैं। नंदी नामक वृषभ पर सवार शैलपुत्री के दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में कमल का पुष्प है। शैलराज हिमालय की कन्या होने के कारण इन्हें शैलपुत्री कहा गया। इन्हें समस्त वन्य जीव-जंतुओं की रक्षक माना जाता है। दुर्गम स्थलों पर स्थित बस्तियों में सबसे पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना इसीलिए की जाती है कि वह स्थान सुरक्षित रह सके।

मां दुर्गा के दूसरे स्वरूप 'ब्रह्मचारिणी' को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया है। माना जाता है कि इनकी आराधना से अनंत फल की प्राप्ति और तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार, संयम जैसे गुणों की वृद्धि होती है। 'ब्रह्मचारिणी' अर्थात् तप की चारिणी यानी तप का आचरण करने वाली। ब्रह्मचारिणी श्वेत वस्त्र पहने दाएं हाथ में अष्टदल की माला और बाएं हाथ में कमंडल लिए सुशोभित है। कहा जाता है कि देवी ब्रह्मचारिणी अपने पूर्व जन्म में पार्वती स्वरूप में थीं। वह भगवान शिव को पाने के लिए 1000 साल तक सिर्फ फल खाकर रहीं और 3000 साल तक शिव की तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर की। इसी कड़ी तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा गया।

मां दुर्गा का तीसरा स्वरूप है चंद्रघंटा। शक्ति के रूप में विराजमान मां चंद्रघंटा मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चंद्रमा है। देवी का यह तीसरा स्वरूप भक्तों का कल्याण करता है। इन्हें ज्ञान की देवी भी माना गया है। बाघ पर सवार मां चंद्रघंटा के चारों तरफ अद्भुत तेज है। इनके शरीर का रंग स्वर्ण के समान चमकीला है। यह तीन नेत्रों और दस हाथों वाली हैं। इनके दस हाथों में कमल, धनुष-बाण, कमंडल, तलवार, त्रिशूल और गदा जैसे अस्त्र-शस्त्र हैं। कंठ में सफेद पुष्पों की माला और शीष पर रत्नजड़ित मुकुट विराजमान हैं। यह साधकों को चिरायु, आरोग्य, सुखी और सम्पन्न होने का वरदान देती हैं। कहा जाता है कि यह हर समय दुष्टों का संहार करने के लिए तत्पर रहती हैं और युद्ध से पहले उनके घंटे की आवाज ही राक्षसों को भयभीत करने के लिए काफी होती है।

चतुर्थ स्वरूप है कुष्मांडा। देवी कुष्मांडा भक्तों को रोग, शोक और विनाश से मुक्त करके आयु, यश, बल और बुद्धि प्रदान करती हैं। यह बाघ की सवारी करती हुई अष्टभुजाधारी, मस्तक पर रत्नजड़ित स्वर्ण मुकुट पहने उज्जवल स्वरूप वाली दुर्गा हैं। इन्होंने अपने हाथों में कमंडल, कलश, कमल, सुदर्शन चक्र, गदा, धनुष, बाण और अक्षमाला धारण की हैं। अपनी मंद मुस्कान से ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के कारण इनका नाम कुष्मांडा पड़ा। कहा जाता है कि जब दुनिया नहीं थी तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार था। ऐसे में देवी ने अपनी हल्की-सी हंसी से ब्रह्मांड की उत्पत्ति की। वह सूरज के घेरे में रहती हैं। सिर्फ उन्हीं के अंदर इतनी शक्ति है, जो सूरज की तपिश को सहन कर सकें। मान्यता है कि वही जीवन की शक्ति प्रदान करती हैं।

दुर्गा का पांचवां स्वरूप है स्कन्दमाता। भगवान स्कन्द (कार्तिकेय) की माता होने के कारण देवी के इस स्वरूप को स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता है। यह कमल के आसन पर विराजमान हैं, इसलिए इन्हें पद्मासन देवी भी कहा जाता है। इनका वाहन भी सिंह है। इन्हें कल्याणकारी शक्ति की अधिष्ठात्री कहा जाता है। यह दोनों हाथों में कमलदल लिए हुए और एक हाथ से अपनी गोद में ब्रह्मस्वरूप सनतकुमार को थामे हुए हैं। स्कन्द माता की गोद में उन्हीं का सूक्ष्म रूप छह सिर वाली देवी का है।

दुर्गा मां का छठा स्वरूप है कात्यायनी। यह दुर्गा देवताओं और ऋषियों के कार्यों को सिद्ध करने लिए महर्षि कात्यायन के आश्रम में प्रकट हुईं। उनकी पुत्री होने के कारण ही इनका नाम कात्यायनी पड़ा। देवी कात्यायनी दानवों व पापियों का नाश करने वाली हैं। वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले दानवों को अपने तेज से ही नष्ट कर देती थीं। यह सिंह पर सवार, चार भुजाओं वाली और सुसज्जित आभा मंडल वाली देवी हैं। इनके बाएं हाथ में कमल और तलवार व दाएं हाथ में स्वास्तिक और आशीर्वाद की मुद्रा है। दुर्गा का सातवां स्वरूप कालरात्रि है, जो देखने में भयानक है लेकिन सदैव शुभ फल देने वाला होता है। इन्हें 'शुभंकारी' भी कहा जाता है। 'कालरात्रि' केवल शत्रु एवं दुष्टों का संहार करती हैं। यह काले रंग-रूप वाली, केशों को फैलाकर रखने वाली और चार भुजाओं वाली दुर्गा हैं। यह वर्ण और वेश में अर्द्धनारीश्वर शिव की तांडव मुद्रा में नजर आती हैं। इनकी आंखों से अग्नि की वर्षा होती है। एक हाथ से शत्रुओं की गर्दन पकड़कर दूसरे हाथ में खड़ग-तलवार से उनका नाश करने वाली कालरात्रि विकट रूप में विराजमान हैं। इनकी सवारी गधा है, जो समस्त जीव-जंतुओं में सबसे अधिक परिश्रमी माना गया है।

नवरात्र के आठवें दिन दुर्गा के आठवें रूप महागौरी की उपासना की जाती है। देवी ने कठिन तपस्या करके गौर वर्ण प्राप्त किया था। कहा जाता है कि उत्पत्ति के समय 8 वर्ष की आयु की होने के कारण नवरात्र के आठवें दिन इनकी पूजा की जाती है। भक्तों के लिए यह अन्नपूर्णा स्वरूप हैं, इसलिए अष्टमी के दिन कन्याओं के पूजन का विधान है। यह धन, वैभव और सुख-शांति की अधिष्ठात्री देवी हैं। इनका स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा तथा श्वेत वस्त्रधारी है। यह एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे में डमरू लिए हुए हैं। गायन और संगीत से प्रसन्न होने वाली 'महागौरी' सफेद वृषभ यानी बैल पर सवार हैं।

नवीं शक्ति 'सिद्धिदात्री' सभी सिद्धियां प्रदान करने वाली हैं, जिनकी उपासना से भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। कमल के आसन पर विराजमान देवी हाथों में कमल, शंख, गदा, सुदर्शन चक्र धारण किए हैं। सिद्धिदात्री देवी सरस्वती का भी स्वरूप हैं, जो श्वेत वस्त्रालंकार से युक्त महाज्ञान और मधुर स्वर से भक्तों को सम्मोहित करती हैं।

माता शैलपुत्री के स्वरूप में की दर्शनार्थियों से मतदान की अपील

चिमनाबाई की छात्राओं ने शंख द्वार पर दर्शनार्थियों को मतदान के लिए जागरूक किया

देवास। कलेक्टर ऋषव गुप्ता के निर्देशन तथा जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी हिमांशु प्रजापति के मार्गदर्शन में नवरात्रि के प्रथम दिवस माताजी टेकरी शंख द्वार पर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। पोस्टर एवं बैनर के माध्यम से श्रद्धालुओं को आगामी लोकसभा चुनाव में शत प्रतिशत मतदान करने के लिए प्रेरित किया गया। प्राचार्य रूचि व्यास, सांस्कृतिक प्रभारी नीलम पटेरिया और एन.सी.सी. प्रभारी मीनल राज भदोरिया के सहयोग से महारानी चिमनाबाई शासकीय कन्या उ.मा.वि. देवास की छात्राओं और एन.सी.सी दल के सदस्यों ने जिला निर्वाचन द्वारा उपलब्ध कराए गए बैज लगाते हुए दर्शनार्थियों से निवेदन किया कि लोकसभा के महायज्ञ में अपने वोट की आहुति अवश्य डालें। छात्रा मुस्कान पंवार ने माता शैलपुत्री के वेश में भक्तजनों को स्मरण कराया कि जिस प्रकार जीवन में एक एक श्वास महत्वपूर्ण है उसी प्रकार चुनाव में एक एक वोट का महत्व है। किसी प्रलोभन में आए बिना निर्भिक होकर मतदान करें। एन.सी.सी. दल की पूजा सौराष्ट्रीय, पायल सोलंकी, छाया मालवीय, निशा मालवीय, मनीषा उपाध्याय और दीपिका सोनगरा के साथ विद्यालय की प्रिया अग्रवाल, पायल हाड़ा, हेमलता लाठिया, नेहा मुछाल, निशिका मुछाल, रोशनी मालवीय, शिवानी पनवार और स्नेहा ठाकुर ने कार्यक्रम में सहभागिता की। इस अवसर पर नगरीय स्वीप प्रभारी स्मिता रावल और सदस्यगण डॉ. रजनीश पोरवाल तथा प्रसून पंड्या भी उपस्थित थे।

आज निकलेगी भगवान झूलेलाल जी की भव्य शोभा यात्रा

देवास। पूज्य सिंध हिन्दू पंचायत के अध्यक्ष अनिल पंजवानी एवं सचिव अशोक पेशवानी ने बताया कि पूज्य सिंध हिन्दू पंचायत द्वारा पांच दिवसीय भगवान झूलेलाल महोत्सव के अंतर्गत आज 10 अप्रैल को सायं 5 बजे श्री बहराणा सा. का पूजन होगा। दयानंद चौक स्थित सिंधी धर्मशाला पर शाम 6 बजे महंत स्वामी श्री गुरूचरण जी महाराज द्वारा भगवान झूलेलाल की भव्य शोभा यात्रा का प्रारंभ किया जाएगा। जिसमें भगवान झूलेलाल एवं प्रभु श्रीराम की चलित झांकियां आकर्षण का केन्द्र रहेगी। रात्रि 9 से 11 बजे तक विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा। समाज अध्यक्ष एवं सचिव ने सभी समाज जन एवं अन्य समाज के लोगों से अपील की है कि अधिक से अधिक संख्या में आकर भंडारे की प्रसादी ग्रहण करें। उक्त जानकारी मीडिया प्रभारी संजय तलरेजा ने दी।

स्वर्ण जयंती कप क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन 11 को

देवास। बैंक नोट प्रेस देवास के सफलतम 50 वर्ष पूर्ण होने पर 11 अप्रैल को अंर्तविभागीय क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। संस्थान के मुख्य महाप्रबंधक, एस महापात्र एवं मुख्य महाप्रबंधक के एन महाप्रबंधक सुनिल यादव, दीपक पड़वल, परिक्षित जोशी, प्रशांत महाजन, सुनिल दुपारे, पी गणेश कुमार, प्रदीप शर्मा, अभिराज सिंह ठाकुर, सहित समस्त अधिकारी उपस्थित होकर खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन करेंगें। साथ ही बैंक नोट प्रेस के सभी श्रमिक संघ भी उपास्थित रहेगे प्रतियोगिता के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि की भूमिका में होंगें।

महाराजा भोज फाउंडेशन द्वारा हिंदू नव वर्ष पर सूर्य अर्घ्य कार्यक्रम में दिखा उत्साह

संस्कृति संरक्षण के उद्देश्य से आयोजित यह कार्यक्रम आज हिंदू परिवारों में परंपरा का रूप लेता जा रहा है

धार। नव वर्ष गुड़ी पड़वा पर प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला सूर्य अर्घ्य के कार्यक्रम महाराजा भोज फाउंडेशन द्वारा धार किले की प्राचीर से आज प्रातः सूर्य की पहली किरण के साथ सामूहिक सूर्य अर्घ्य प्रदान कर संपन्न हुआ. कार्यक्रम की जानकारी देते हुए संस्था के अध्यक्ष दीपक बिडकर ने बताया कि 14 वर्षों से हिंदू नव वर्ष पर आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम 9 अप्रैल को प्रातः 6 बजे संपन्न हुआ. धार नगर के प्रबुद्ध जन सहपरिवार इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए . कार्यक्रम आज धार जिले की पहचान बन चुका है संस्कृति संरक्षण के उद्देश्य से आयोजित किया जाने वाला यह कार्यक्रम आज हिंदू परिवारों में परंपरा का रूप लेता जा रहा है . कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी एवं विशेष अतिथि द्वय धार के प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक डॉ दिनेश कर्मा एवं नगर के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं व्यवसायी राकेश राजपुरोहित थे.मुख्य अतिथि मनोज सोमानी ने सभी को नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि महाराजा भोज फाउंडेशन द्वारा आयोजित यह कार्यक्रम सभी के लिए अनुकरणीय है हिंदू संस्कृति एवं सभ्यता से नव पीढ़ी को परिचित कराने के लिए यह

कार्यक्रम उपयुक्त है हमारी पुरातन सभ्यता एवं संस्कृति जिसको दुनिया ने माना है वही जीवन पद्धति पूरी मानव सभ्यता के लिए अनुकूल है . भारत माता पुनः विश्व गुरु के सिंहासन पर आसीन हो यही हम सब की कामना है . वह समय अब निकट आता दिखाई दे रहा है क्योंकि यहां उपस्थित जन समुदाय इसका प्रतीक है . विशेष अतिथि डॉ. दिनेश कर्मा ने अपने उद्बोधन में सभी को नववर्ष की मंगलकामनाएं दी एवं संस्था के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के लिए साधुवाद दिया . विशेष अतिथि राकेश राजपुरोहित ने बताया कि 14 वर्ष तक लगातार इस प्रकार का कार्यक्रम करना एक चुनौती है जिसे इस संस्था के सभी कार्यकर्ताओं ने स्वीकार किया एवं कार्यक्रम को सफल करने के लिए जो श्रम किया है वह साधुवाद का पात्र है. अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम संयोजक ममता जोशी, संगीता गोधा, सुनीता दीक्षित एवं कार्यक्रम के व्यवस्थापक शैलेन्द्र चौरसिया ने किया. कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता जिसमें राजेश गुप्ता, सुरेंद्र ठाकुर, तरुण गावडे रिंकू मेरवान, विकास गुणे कालीचरण सोनवानीया, अंकित जैन की विशेष भूमिका रही. इस कार्यक्रम में गणमान्य नागरिकों में जो विगत 14 वर्षों से सम्मिलित होते आ रहे हैं उनमें राजेंद्र शर्मा, गणेश खेर ,आशीष बसु,अनिल इंदुरकर,अविनाश वर्मा,भूपेंद्र सोनी, संतोष महाजन, श्याम खंडेलवाल,संजय शर्मा आदि उपस्थित रहे. कार्यक्रम पंडित निलेश व्यास के आचार्यत्व में आदित्य हृर्दय स्त्रोत का वाचन करते हुए संपन्न हुआ. कार्यक्रम का संचालन अंशुल शर्मा ने किया.कार्यक्रम की जानकारी राजेश गुप्ता ने दी.पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से इस कार्यक्रम में उपहार स्वरूप तुलसी के पौधों का वितरण संस्था की मातृशक्ति भारती कराले ,निशा शर्मा, संगीता चौधरी ,आरती बिड़कर, खुशी पात्रिकर ने किया।

भोपाल में एम. सी. डी. ए. प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक संपन्न

धार। भोपाल में मध्य प्रदेश केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन की प्रदेश स्तरीय कार्यकारिणी की बैठक प्रदेश अध्यक्ष गोतम चन्द्र धींग की अध्यक्षता में हुई । जिसमे प्रदेश में ऑनलाइन दवा बिक्री की दुष्परिणामों पर विस्तृत चर्चा हुई, जिसमें जनता के बीच इसकी विसंगतियों की जानकारी देना तथा प्रशासनिक अधिकारियों इस पर कार्यवाही हेतु बाध्य करना। मध्यप्रदेश फ़ॉर्मेसी कौंसिल के गठन में मेम्बर रखने के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई ।

इस अवसर पर धार जिला केमिस्ट एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ. अशोक शास्त्री ने केमिस्टों की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुआ बताया की जिले में ग्रामीण क्षेत्रों में जनरल स्टोर्स , गुमटियों में, किराना दुकानों में दवाओं तथा सौन्दर्य प्रसाधन के रूप में बेचे जाने वाले ऑइनमेंट की बिक्री, हरि पत्री , गोल्डन पत्री, लोमोफेन, कोल्ड वाली रेंज आदि दवाओं की खुलेआम बिक्री का मुद्दा उठाया, साथ कहा अनेक बाहर के होलसेलर मार्केट से भी कम रेट पर इन्हें सप्लाई करतै हैं । नियमानुसार कोई भी होलसेलर कोई भी दवा बिना लाइसेंस की दुकानों पर बेच ही नहीं सकते । जहाँ केमिस्ट हजारो रुपये खर्च कर लाइसेंस बनवाकर अपना व्यापार करता हैं । जिसके कारण केमिस्टों का बहुत नुकसान हो रहा हैं। इस अवसर पर धार के नवनिर्वाचित जिलाअध्यक्ष डॉ. अशोक शास्त्री व सचिव आशीष बाँगर का प्रदेश के महासचिव राजीव सिंघल व अन्य पदाधिकारियों ने स्वागत किया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष उमाशंकर सोनी, नगर अध्यक्ष विनीत खत्री ने भी सहभागिता की। जानकारी नगर सचिव पंकज बोराना ने दी ।

हिल स्टेशन के संवेदनशील क्षेत्र में नियमों का पालन करा पाने में प्रशासन पूरी तरह अक्षम साबित..!

सीसी डब्ल्यू एल से बगैर अनुमति लिए लोकनिर्माण विभाग निर्माण कैसे कर रहा..

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

पचमढ़ी हिल स्टेशन पर सीसी डब्ल्यू एल मुख्य वन प्राणी संरक्षक से अनुमति लिए बगैर ही निर्माण कार्य हो रहा है..! लोकनिर्माण विभाग साडा की जमीन पर हवाई पट्टी निर्माण कर रहा है। इस निर्माण कार्य को लेकर जितने भी प्रशासनिक जिम्मेदार विभाग जो नियम कानून का पालन कराते उन सब की ख़ामोशी आने वाले भविष्य के लिए खतरा साबित हो सकती है क्योंकि निर्मित की जा रही हवाई पट्टी वाला क्षेत्र ईको सेंसेटिव जोन सहित सतपुड़ा टाइगर रिजर्व वर्ल्ड लाइफ कोर एरिया सेंसेटिव क्षेत्र से लगकर है, हिल स्टेशन पचमढ़ी में हवाई पट्टी बनाए जाने की योजना इतनी गैरजिम्मेदाराना तरीके से क्रियान्वित क्यों की जा रही यह शोध का विषय बन गया जिसमें निर्माण ऐजेंसी लोकनिर्माण विभाग ने एनजीटी से अनापत्ति प्रमाण-पत्र लेना उचित नहीं समझा..! छिन्दवाड़ा निवासी कैप्टन ब्रिजेश कुमार भारद्वाज की शिकायत पर पर मची खलबली के बाद वनविभाग डिप्टी डायरेक्टर पूजा नागले जरुर निर्माणाधीन स्थल पहुंची लेकिन उन्होंने भी केवल खानापूर्ति की, जबकि उच्च न्यायालय के निर्देश पर वैसे भी पचमढ़ी हिल स्टेशन पर कोई भी नया निर्माण कार्य प्रतिबंधित कर रखा गया है फिर साडा की जमीन पर आनन-फानन छह माह से बगैर किसी विभाग की अनुमति लिए हवाई पट्टी बनाने के लिए 100 फुट चौड़ी, 25 फुट गहरी नये क्षेत्र में खुदाई कर मिट्टी जंगल में कहां फैंकी गई वह पता नहीं..? मामले को लेकर विभागीय अधिकारी कुछ कहने से बचते हैं लेकिन सेवानिवृत्त वन अधिकारी मधुकर चतुर्वेदी हो रहे इस गलत कार्य का बगैर रुके एक सांस में विरोध कर जाते.. निर्माण कार्य में लगे लोकनिर्माण विभाग के कुशल उपयंत्री कैलाश गुर्दे जो दो दशक से पचमढ़ी में पदस्त है सम्पन्न करा रहे। वैसे तो पचमढ़ी शहर सतपुरा टाइगर रिजर्व के कोर एरिया से घिरा हुआ है और निर्मित किया जा रही हवाई पट्टी से कोर एरिया की बाउंड्री लगभग 200 मीटर दूर है, ऐसे में सवाल उठता है। जमीन से हवा में उड़ने वाले हवाई जहाज का शोर और वायु प्रदूषण होगा क्या संरक्षित वन्य प्राणियों को प्रभावित नहीं करेगा..? वन जीव हवाई पट्टी के उपयोग से होने वाले शोर और वायु प्रदूषण से वन्य जीवों का जो निरंतर विचरण करते है प्रभावित तो होगा। वैसे भी नियमानुसार बायोस्फेर नोटिफिकेशन के अनुसार कोर एरिया को शांत रखा जाना होता है। फिर एनटीसीए के मेंबर सेक्रेटरी के सर्कुलर के अनुसार भी टाइगर रिजर्व के कोर एरिया को शान्त रखने का नियम है। बिना किसी अनुमति के यहां हवाई पट्टी पर खुदाई और पेड़ों की कटाई हो गई । जिसमें पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन ईआईए नहीं किया गया और बगैर पर्यावरण और वन्यजीव अनुमति के ये कार्य किया गया। मामला अब एनजीटी कोर्ट में विचाराधीन कहा जा रहा है।

वक्रोक्ति

दिनेश विजयवर्गीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

जल तरंग पलटी मारी जन कल्याण के लिए

एक बार मैं एक शादी समारोह में भोजन करने गया हुआ था ।वहां भोजन व्यवस्था दो भागों में बंटी हुई थी। एक में पानीपुरी टिकिया चीले आदि चटपटे आईटम और दूसरे भाग में विभिन्न मिठाइयों सहित संपूर्ण भोजन व्यवस्था थी। वहां मेरे एक परिचित मिल गए बोले भोजन का पूरा आनंद लेना हो तो पाला बदल बदल कर खाना होगा। मैंने कहा यदि पाला बदलने से भोजन का स्वाद मजेदार एवं संतुष्टी पूर्ण हो जाता है तो पाला बदल ने में असुविधा क्या है?

आज पाला बदलने का खेल हमारे सामाजिक राजनीतिक जीवन में भी चलता रहता है, क्योंकि उसमें सुविधा एवं उपयोगिता छिपी रहती है। कई खेलों में खिलाड़ी हाफ टाइम के बाद पाला बदल देते हैं इससे उनके मन में फ्रेशनेस आ जाती है और वह एक नए उत्साह से खेलने लगते हैं।

राजनीतिक सुख सुविधा के लिए नेता जी जब तब सहज ही अपने सुख भरे भजन गुनगुनाते पाला बदलने का खेल,खेललेते हैं ।उन्हें ऐसा खेल खेलते समय न तो अपने छोड़ी हुई पार्टी के सहयोग का ध्यान रहता है और ना उसके माध्यम से प्राप्त हुई सुख सुविधा व मिले जन आधार का। वह तो सिर्फ अपना पाला बदल अपने राजनीतिक जीवन की पद प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए शुभ लाभ के पहाड़े पढ़ने की ओर ध्यान बनाए रखते हैं।

पाला बदलकर नेताजी फिर से नयी पार्टी में उसी सम्मान जनक पद प्रतिष्ठा वाले पद पर जम जाते हैं। फिर भले ही छोड़ी गई पार्टी वाले कहते रहें पलटू राम। पर उन्हे इसका कोई फर्क नहीं पड़ता। उसका लक्ष तात्कालिक लाभ ही प्रमुख रहता है। कोई कहता गिरगिट से भी ज्यादा रंग बदल कर जीवन जीने वाले पलटूराम को जनता निपटा देगी। पर जनता को तो सिर्फ वोट लेने वाले को सप्ताह भर पटाना है। और फिर जनता सब कुछ भूल जाती है। जिसमें नई संभावना,क्षेत्र का विकास और कई उपलब्धियां नजर आएं वह उसी की संभावनाओं के साथ बनी रहती है।

पलटी मारने वाले का दिल बड़ा होता है। वह अपनी छुट भैयाओं की आलोचना से नहीं डरता। वह पलटी मारने से पहले अपने को चिकना घड़ा बना कर अपने आत्म विश्वास को बनाये रखता है और तभी वह लोगों द्वारा उसके विरुद्ध कही गई बातों से बेखबरी दुनिया में जीने लगता है। वह जनता को अपनी बातों से पटाने की कला जानता है ।जनता में जाकर वह कहेगा जहां में था वहां के पार्टी वालों के साथ काम करने से जन कल्याणकारी निर्णय लेने में बाधा आ रही थी। बस मैंने जनता का हित सर्वोपरि देख फिर से पूर्व में छोड़ी गई पार्टी में जा रहा हूं। लोकतंत्र में जन कल्याण को सच्चे माने में पूरा करने के लिए यदि एक बार तो क्या दस बार भी पलटी मारना पड़े तो बुराई क्या है? यह तो स्वस्थ राजनीति में जन हित के लिए नवाचार है। इसलिए जब भी किसी नेता को उचित समय लगे तभी आराम से पलटी मार लेना चाहिए। और बात रही विरोधी लोगों की, वह तो कुछ कहेंगे ही, लोगों का काम में कहना। पर किसी की नहीं सुनना। एक कान से सुन दूसरे कान से निकाल देने में ही भलाई है।बस अपने स्वार्थ की सरगम को सुनकर मंद मंद मुस्काने का आनंद लेते रहना चाहिए। इससे कभी कोई बीपी भी ऊपर नीचे नहीं होगा। क्योंकि पलटने की कला लाभ के गुणों से भरपूर जो होती है।

राइट क्लिक

पार्टी प्रवक्ता और राजनीतिक आत्मा के प्रत्यारोपण की नई संस्कृति...

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

इस देश में व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं के चलते नेताओं का दल बदलना और युद्ध के दौरान ही घोड़ा बदलना कोई नई बात नहीं है, लेकिन चलते चुनाव में एक पार्टी प्रवक्ता का अचानक घोर विरोधी पार्टी का दामन थामकर उसका स्तुतिगान शुरू कर देना, जरा नया ट्रेंड है। ट्रेंड क्या बल्कि यूं कहें कि नैतिक पतन की पराकाष्ठा है। कुछ घंटों पहले तक आप जिस पार्टी को दुनिया की सबसे घटिया और अनैतिक पार्टी बताते रहे, दल बदलते ही उसे विश्व की सर्वश्रेष्ठ और नीतिवान पार्टी बताने सकने के लिए जिगर के साथ साथ आत्मा को भी ट्रांसप्लांट करने की हिम्मत चाहिए। हाल में कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता और अर्थशास्त्री गौरव वल्लभ ने जिस तरह अपनी पार्टी को बीच मझधार धता बताकर विपक्षी भाजपा के डेरे में प्रभु गुण गान शुरू किया, उससे कांग्रेस की लाचारी तो उजागर हुई ही, साथ में यह भी साबित हुआ कि दुनिया में हर पेशे की अपनी नैतिकता और लक्ष्मण रेखाएं होती है, सिवाय पार्टी के अधिकृत प्रवक्ता के। दरअसल पार्टी प्रवक्ता ऐसा पद है, जो किसी राजनीतिक दल द्वारा अपने कार्यकर्ता को उसकी तर्क-वितर्क शक्ति, खंडन- मंडन करने की काबिलियत, भाषा पर अधिकार और बेशरमी की हद तक कुतर्क करने की क्षमता के आधार पर दिया जाता है। प्रवक्ता के निजी विचार जो भी हों, लेकिन उसे अपनी ही पार्टी और उसके नेताओं की हर मूर्खता को भी महिमा मंडित करने और विरोधी पार्टी की जायज बात को भी 'राजनीति से प्रेरित' बताकर खारिज करने की प्रतिभा किसी को पार्टी प्रवक्ता बना सकती है। हकीकत में वो एक कठपुतली होता है, जिसके 'आर्टि फिशियल इंटेलिजेंस' होने का मुगालता खुद उसे और जनता को होने लगता है। वो सुबह जो बात कह रहे होते हैं, शाम त तक उस पर यू टर्न लेने में संकोच नहीं करते। आम तौर पर पार्टी प्रवक्ता आदर्श चुनाव आचार संहिता से बंधे होते हैं, लेकिन उनकी स्वयं की कोई आचार संहिता अथवा नीति निष्ठा नहीं होती। अमूमन माना जाता है कि पार्टी प्रवक्ता सम्बंधित पार्टी की विचारधारा, रणनीति, कार्यशैली और अनुशासन के मीडिया पैरोकार होते हैं। माना जाता है कि प्रवक्ता जो कहता है, वो किसी भी मुद्दे पर पार्टी की अधिकृत लाइन होती है, जो दल के शीर्ष नेतृत्व की सोच और रणनीतिक समझ से तय होती है। इस अर्थ में पार्टी प्रवक्ता राजनीतिक ध्वज वाहक होता है, लेकिन तभी तक जब तक कि वह फलां दल में है। पार्टी बदलते ही जबान फेरने में वह वक्त जाया नहीं करता। इसका एक रोचक उदाहरण प्रवक्ता प्रियंका चतुर्वेदी का है। वो जब तक कांग्रेस की प्रवक्ता थीं, तब तक शिवसेना पर हमलावर थी। लेकिन जैसे उनके गृह राज्य महाराष्ट्र में शिवसेना गठबंधन के साथ सत्ता में आई, वो रातो रात शिवसेना (उद्धव) की खैरख्वाह बन गईं। मध्यप्रदेश में भी पूर्व में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थक प्रवक्ता महाराज के पाला बदलते ही कांग्रेसियों के जानी दुश्मन बन गए। वैसे भी इन दिनों भाजपा में आने वालों की संख्या, भाजपा छोड़कर जाने वालों की संख्या की तुलना में बहुत कम है, क्योंकि सत्ता का फेविकोल यहां ज्यादा मजबूत है। इस मायने में प्रवक्ताओं का शब्द कोश सामान्य शब्द कोशों से अलग अर्थ रखता है। प्रवक्ताओं के शब्दकोश में राजनीतिक मौका परस्ती को आस्था परिवर्तन कहा जाता है। मुखौटे बदलने में ये किसी भी राजनीतिक कार्यकर्ता के लिए आइकन हो सकते हैं। दरअसल सत्ताकांक्षा से उपजी बेचैनी उन्हें दलबदल और नए घर की पहरेदारी पर विवश करती है। राजनीतिक निर्गुणिया से सियासी सगुणिया होने का यह अद्भुत चमत्कार है। यानी जिस पार्टी में वो बरसो भजन करते रहे, वह अचानक उन्हें नास्तिक लगने लगती है।

तो क्या पार्टी प्रवक्ता होने की कोई मर्यादा या मापदंड नहीं हैं? देश के जाने माने प्रबंधन विशेषज्ञ हेमंत गवले ने किसी राजनीतिक पार्टी प्रवक्ता के कुछ मापदंड तय किए हैं। पहला है, पार्टी का मानवीकरण करने की योग्यता खासकर अति संवेनदशील मानवीय मुद्दों पर, दूसरा विरोधी को जिम्मेदार ठहराना, तीसरा, पार्टी के रूख को सही ठहराना, चौथा, हर मुद्दे पर पार्टी का संदेश प्रत्येक मीडिया प्लेटफार्म से लोगों तक पहुंचाना (यह तकनीकी काम ज्यादा है)। इसी तरह अगर पाटी प्रवक्ता की योग्यता का पैमाने देखे जाए तो उसे स्ट्रीट स्मार्ट' यानी अपनी पार्टी और सरकार का बचाव करने में सक्षम होना चाहिए, दूसरा हवा को अपने पक्ष में पलटना, मोटी चमड़ी का होना, ज्ञानी और विश्वसनीय होना तथा हाजिर जवाब और मोहक होना। कई पार्टी प्रवक्ता इन तमाम मानकों पर खरा भी उतरते हैं। लेकिन ज्यादातर का आचरण इन मानकों से परे होता है। अलबत्ता पार्टी प्रवक्ता होना या बनना भी एक 'प्रोफेशन' बन चुका है। किसी भी पार्टी का श्रेष्ठ प्रार्टी प्रवक्ता कौन, इसको लेकर एक मीडिया प्लेटफार्म e4m ने पिछले दिनों विभिन्न राजनीतिक दलों के 50 श्रेष्ठ राष्ट्रीय प्रवक्ताओं की सूची जारी की थी। वक्तृत्व क्षमता और राजनीतिक निरूपण की योग्यता इस चयन के पैमाने थे। इस सूची में भाजपा के सर्वाधिक 24 प्रवक्ता शामिल थे। इसमें भी सर्वश्रेष्ठ प्रवक्ता भाजपा के डॉ. सुधांशु त्रिवेदी को बताया गया था। हालांकि भाजपा के प्रवक्ताओं में कई तो आयातित प्रवक्ता थे। ये वो प्रवक्ता हैं, जो कभी भाजपा के घोर आलोचक रहे हैं। लेकिन दलबदल का कमाल देखिए कि अब यही प्रवक्ता भाजपा के राजपुरोहित अथवा राज अप्सराएं हैं और भाजपा उनके लिए 'राजमाता' के समान है। इस सूची में भाजपा के बाद कांग्रेस 10, 3-3 आप और टीएमसी के, 2-2 सपा, उद्धव सेना व बीजेडी के तथा 1-1 प्रवक्ता बीआरएस, एनसीपी, वायएसआर कांग्रेस, एआईएडीएमके, एआईएमआईएम, टीडीपी,डीएमके और एलजेपी के हैं। कांग्रेस का सर्वश्रेष्ठ प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी को बताया गया था। इसका अर्थ यह है कि भाजपा के अलावा अन्य पार्टियों के पास अब अच्छेप राष्ट्रीय प्रवक्ताओं का भी टोटा है। जो हैं, वो भी अपनी पार्टी का बचाव कितने दिनों तक करेंगे, यह कोई नहीं जानता।

इसमें दो राय नहीं कि अच्छा पार्टी प्रवक्ता वही हो सकता है, जो पार्टी लाइन को ठीक से समझता हो और मुश्किल प्रसंगों में भी उसे डिफेंड करने की काबिलियत रखता हो। मीडिया प्लेटफार्मों पर वह पार्टी का चेहरा होता है और जिसे खुद के बजाए पार्टी रूपी आईने का चेहरा सतत साफ रखना होता है। उसे यह जताना होता है कि वह पार्टी की आत्मा से एकात्म है और जो कह रहा है, वही उसका समुचित पक्ष है। जनता उसे सही माने न माने, यह अलग बात है।

ऐसे में सवाल यह उठता है कि जो पार्टी प्रवक्ता दल की रीति-नीति का प्रचारक और संरक्षक होता है, वह रातोरात पाला बदल कर अपनी वैचारिक निष्ठा का प्रत्यारोपण कैसे कर सकता है अथवा कर लेता है? गौरव वल्लभ तो इस अपसंस्कृति के प्रतीक भर हैं। गौरव कल तक कांग्रेस के दमदार प्रवक्ताओं में गिने जाते थे। खासकर आर्थिक नीतियों पर उन्होंने कई बार भाजपा को आड़े हाथों लिया। इसी तरह गौरव भाटिया, शाजिया इल्मी, शहजाद पूनावाला, अजय आलोक जैसे कई प्रवक्ता हैं जो पहले धर्म निरपेक्षता की तख्तियां हाथ में लेकर घूम रहे थे और देश का भविष्य इसी में सुरक्षित मान रहे थे, वो अचानक राम भक्त, मोदी सिक्त, राष्ट्रवादी कैसे और क्यों हो गए? जो वो पहले कर रहे थे, वह महज एक राजनीतिक स्वांग था या फिर अब वो जो कर रहे हैं, वह तमाशा है या फिर सोलह आने सच है? साथ में यह भी कि ऐसे 'विभीषण प्रवक्ताओं' पर भाजपा या अन्य पार्टियां भी कितना भरोसा करती हैं? प्रवक्ताओं का 360 डिग्री से राजनीतिक हृदय परिवर्तन आखिर किन कारणों से होता है और ये प्रवक्ता भी क्या उन्हीं राजरोगों से मुक्त नहीं है, जो सत्ता का सीधा नियंत्रण चाहते हैं? हकीकत में वाक् चातुर्य भरे अधिकांश प्रवक्ता मैदानी राजनीति के 'अग्निवीर' ही होते हैं। बहुत बिरले ऐसे प्रवक्ता हैं, जो चुनावी रण में भी विजेता रहे हैं और न सिर्फ सत्ता सिंहासन तक पहुंचे हैं और पहुंचकर लंबे समय तक टिके हैं। जबकि अधिकांश प्रवक्ताओं के राजनीतिक कल्याण का रास्ता राज्यसभा और विधान परिषदों के जरिए ही तय होता है। कभी कभार कोई मंत्री पद भी पा लेता है, लेकिन वैसा होने के बाद भी वह आचरण की मर्यादा में रहे, यह जरूरी नहीं है। बल्कि उसके बौरा जाने का खतरा ज्यादा होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो पार्टी प्रवक्ता वाक् वीर ही होते हैं और वो युद्धवीर बनने का भ्रम पाले रहते हैं। राजनीतिक दलों को पता रहता है कि जबानी लड़ाई लड़ने और मैदानी लड़ाई लड़ने के पैमाने और तकाजे बिल्कुल अलग अलग होते हैं। तुरही बजाने वाला त्रिशूल भी चला ले, जरूरी नहीं है। लेकिन प्रवक्ताओं को मिलने वाले भरपूर मीडिया कवरेज के बावजूद यह कसक उनमें हमेशा रहती है कि वो सत्ता साकेत के दरबान ही हैं। राजा के कसीदे काढ़ते और दुश्मन की खाल उधेड़ते वह यह भ्रम पाल बैठते हैं कि प्रखर प्रवक्ताई की ऐवज में उन्हें सीधी सत्ता अथवा अवाम की नुमाइंदगी का वैसा नेग मिलना चाहिए, जितना कि खुद राजा को मिलती है। इसीलिए ज्यादातर प्रवक्ता हर चुनाव में इस जोड़तोड़ में रहते हैं कि पार्टी की रखवाली का मुआवजा उन्हें चुनाव टिकट के रूप में मिले। जबकि ज्यादातर पार्टियों को पता होता है कि (मीडियाकर्मियों की तरह) लकड़ी की तलवार भांजने वाले तोप नहीं चला सकते। गौरव भाटिया के बारे में भी यही कहा जाता है कि वो राजस्थान से लोकसभा का टिकट चाहते थे। पार्टी ने नहीं दिया तो उन्होंने अब तक की तपस्या को निरर्थक मान उस भाजपा की पैरवी की राह पकड़ ली, जिसे वो कल तक देश के लिए सबसे बड़ा खतरा मान रहे थे। दिल के साथ रूह के प्रत्यारोपण की यह कठिन कला बड़े-बड़े जादूगरों को भी नसीब नहीं होती। वकील भी सच और झूठ दोनो पक्षों की पैरवी बड़ी सफाई से करते हैं। लेकिन नैतिकता का झीना पर्दा वहां भी होता है कि वो एक बार वकील जिसकी पैरवी करता है, अंत तक उसीके पाले में रहता है। लेकिन पार्टी प्रवक्ता पर ऐसा कोई नैतिक बंधन भी नहीं है। वह जिस पार्टी की बधाई गाते हैं, पार्टी बदल कर उसी पूर्व राजनीतिक दल पर वार करने में गुरेज नहीं करते।

ऐसे में लाख टके का सवाल यह कि पार्टी प्रवक्ताओं की नैतिकता है क्या? क्या वो महज एक राजनीतिक ठेका मजदूर हैं या फिर पार्टी की रीति नीति के रखवारे? उनकी कोई राजनीतिक प्रतिबद्धता ही नहीं है तो वो सियासत में आए क्यों हैं? अगर उनमें और सत्ताकांक्षी राजनेताओंमें कोई नैतिक फरक नहीं हैं तो प्रवक्ताओं को जनता भी गंभीरता से क्यों ले?

सीएम मोहन यादव ने मैहर में किए मां शारदा के दर्शन

जुबिन ने महाकाल के दरबार में सुनाए भजन, देवी मंदिरों में उमड़े श्रद्धालु

भोपाल। चैत्र नवरात्रि मंगलवार से शुरू हो गई। आज घट स्थापना की जा रही है। शक्तिपीठ उज्जैन के हरसिद्धि माता मंदिर, मैहर के शारदा भवानी, सीहोर जिले के सलकनपुर में विजयासन माता मंदिर, दतिया में मां पीतांबरा पीठ, आगर मालवा जिले के मां बगुलामुखी मंदिर और दूसरे देवी मंदिरों में सुबह से श्रद्धालुओं की भीड़ है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

ने सतना के मैहर शक्ति पीठ में मां शारदा के दर्शन किए। उन्होंने कहा, 'नव संवत्सर के शुभ अवसर पर मेरी ओर से प्रदेश एवं देशवासियों को मंगल कामनाएं। हमारा सौभाग्य है कि आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मध्यप्रदेश में पधार रहे हैं। उनका आगमन प्रदेश को नई शक्ति, संबल और ऊर्जा प्रदान करेगा।' हिंदू कैलेंडर के नव वर्ष विक्रम संवत 2081 की शुरुआत भी आज से हो गई है। हिंदू कैलेंडर का नव वर्ष गुढ़ी पड़वा को माना जाता है। विक्रम संवत् अंग्रेजी कैलेंडर से 57 वर्ष आगे है। हिंदू कैलेंडर का पहला महीना चैत्र और आखिरी महीना फाल्गुन होता है। हिंदू नव वर्ष के पहले दिन पार्श्व गायक जुबिन नौटियाल महाकाल मंदिर पहुंचे। उन्होंने नंदी हॉल से दर्शन कर शिव भजन सुनाया।

सीएम बोले- दिग्विजय-कमलनाथ के लिए महिलाएं भोग-विलास की देवी

इमरती देवी ने कहा- उनके शब्द और काम अच्छे होते तो कांग्रेस क्यों छोड़ती

भोपाल। ग्वालियर दौरे पर आए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निशाने पर कांग्रेस रही। सोमवार रात थाटीपुर के महिला सम्मेलन में सीएम ने कहा, कांग्रेसियों के दिलों में महिलाओं के लिए कभी मान-सम्मान नहीं रहा। कमलनाथ आईफा अवार्ड में मुंबई की अभिनेत्री को ला रहे थे। दिग्विजय सिंह बहन-बेटी के लिए गंदा शब्द उपयोग करते हैं। बहन-बेटी के बजाए इनको अपने भोग-विलास की देवी दिखती है। मुख्यमंत्री के इस बयान पर पूर्व मंत्री इमरती देवी ने कहा, 'सीएम ने सही कहा है। उनके (दिग्विजय और कमलनाथ) शब्द, भाषा और काम अच्छे होते तो हम कांग्रेस छोड़कर क्यों आते। 2020 के चुनाव में मेरे लिए जो भी कहा गया था, उसे सभी ने सुना था।' मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गांधी परिवार पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा, 'बहन-बेटी का ब्याह हो जाता है तो उसका सरनेम भी बदल जाता है, लेकिन देखो प्रियंका गांधी वाड्रा को, शादी वाड्रा परिवार में की और लिखती हैं गांधी। ये असली गांधी परिवार है ही नहीं, नकली गांधी हैं ये सब।' राहुल गांधी पर टिप्पणी करते हुए कहा, 'कांग्रेस पिछले 15 साल से फुस्सी बम लेकर घूम रही है। सुमावली विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक अजब सिंह कुशवाह, करैरा के पूर्व विधायक लाखन सिंह बघेल और ग्वालियर ग्रामीण क्षेत्र के बहुजन समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष सुरेश बघेल सहित अन्य लोगों को भी मुख्यमंत्री ने भाजपा की सदस्यता दिलाई।

प्रदेश में अगले 7-8 दिन आंधी-बारिश का अलर्ट

भोपाल-विदिशा में गिरा पानी; 42 जिलों में बारिश, 4 जिलों में ओले गिरने का अनुमान

भोपाल। मध्यप्रदेश में अगले 7-8 दिन यानी 15 अप्रैल तक आंधी-बारिश का दौर जारी रहेगा। मंगलवार दोपहर तीन बजे के बाद भोपाल में तेज बारिश हुई। विदिशा और शाजापुर में भी पानी गिरा। रायसेन में आंधी के बाद बादल बरसे। मौसम विभाग के मुताबिक, साइक्लोनिक सर्कुलेशन, ट्रफ लाइन और वेस्टर्न डिस्टरबेंस की वजह से प्रदेश में मौसम बदला हुआ है। मंगलवार को 42 जिलों में बारिश और 4 जिलों में ओले गिरने का भी अनुमान है। छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, मंडला और डिंडोरी में सिस्टम ज्यादा स्ट्रॉन्ग रहेगा। बैतूल, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, मंडला, सिवनी, बालाघाट, जबलपुर, दमोह, कटनी, उमरिया और डिंडोरी में 40 से 50 किमी की रफ्तार से आंधी और आकाशीय बिजली गिर सकती है। आईएमडी भोपाल के सीनियर वैज्ञानिक डॉ. वेदप्रकाश सिंह ने बताया कि 11-12 अप्रैल को भी ऐसा ही मौसम रहेगा। 10-11 अप्रैल को एक और वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव होगा। इससे मौजूदा सिस्टम और भी मजबूत हो जाएगा। इस कारण एक सप्ताह तक मौसम ऐसा ही बना रहेगा।

कब-कहां होगी बारिश

10 अप्रैल को सिवनी और बालाघाट में मौसम का असर ज्यादा रहेगा। तेज आंधी के साथ ओले-बारिश भी हो सकती है। सीहोर, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, जबलपुर, मंडला, डिंडोरी और अनूपपुर में भी मौसम बदला रहेगा। 11 अप्रैल को उज्जैन, आगर-मालवा, राजगढ़, शाजापुर, देवास, बुरहानपुर, खंडवा, हरदा, सीहोर, भोपाल, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, सागर, दमोह, छतरपुर, जबलपुर, पन्ना, कटनी, उमरिया, डिंडोरी, मंडला, बालाघाट, सिवनी में गरज-चमक, हल्की बारिश और कहीं-कहीं ओले गिरने का भी अनुमान है। 12 अप्रैल को नीमच, मंदसौर, बुरहानपुर, डिंडोरी, अनूपपुर, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, सीहोर, नर्मदापुरम, हरदा, बैतूल, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा में गरज-चमक के साथ हल्की बारिश हो सकती है। अप्रैल में पहली बार साइक्लोनिक सर्कुलेशन और वेस्टर्न डिस्टरबेंस की वजह से स्ट्रॉन्ग सिस्टम की एक्टिविटी है। इस कारण आंधी, बारिश, ओले और आकाशीय बिजली की गरज-चमक की स्थिति बनी रहेगी। बंगाल की खाड़ी और अरब सागर से नमी आ रही है। अप्रैल महीने में प्रदेश में आंधी-बारिश का ट्रेंड है। पिछले 10 में से 7 साल बारिश हुई थी। अबकी बार भी ऐसा ही मौसम रहेगा। पूरे प्रदेश के भीगने की संभावना है। ओले, बारिश और आंधी का मौसम बनने से मौसम विभाग ने लोगों के लिए एडवाइजरी भी जारी की है। जिसमें उन्हें आवश्यक सावधानी बरतने को कहा गया है।

डॉक्टर के घर 50 लाख रुपए और जेवरात की लूट

राजधानी में घर के नौकर ने वारदात को दिया अंजाम

भोपाल। भोपाल में एक महिला डॉक्टर के घर 50 लाख रुपए, 10 तोले का हार और एक डायमंड सेट की लूट हो गई। वारदात को घर के ही नौकर ने अपने साथियों के साथ मिलकर अंजाम दिया था। घटना के वक्त पूरा परिवार एक होटल में बर्थडे मनाने गया था। इस दौरान घर में नौकर लक्ष्मण, उसका नाबालिग भाई और सर्वेंट पति-पत्नी को मिलाकर चार लोग थे। शाहपुरा बी सेक्टर मकान नंबर 234 निवासी डॉ. अंशुल सिंह के घर सोमवार रात 10.10 बजे घटना हुई। उस वक्त घर में 4 नौकर-नौकरानी थे। तभी रात हथियारबंद बदमाश घर में घुसे। उन्होंने लक्ष्मण को पीटने का नाटक किया। साथ ही नौकर-नौकरानी से भी मारपीट कर उन्हें कमरे में बंद कर दिया। लक्ष्मण ने घटना सच्ची लगी इसलिए अपने साथियों के साथ घर में तोड़फोड़ की। इसके बाद रुपए और जेवरात लेकर बदमाशों को रवाना कर दिया। फिर पुलिस को सूचना दी। इस बीच डॉक्टर का परिवार होटल से लौटा तो उन्हें घटना की जानकारी मिली। बता दें, डॉ. अंशुल सिंह कोलार रोड स्थित एलएन मेडिकल कॉलेज एंड जेके हॉस्पिटल के न्यूरोलॉजी डिपार्टमेंट में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। डॉ. अंशुल हाल ही में भाजपा में शामिल हुए सतना जिले के नागोद से पूर्व विधायक ज्ञानेंद्र सिंह की बहन हैं।

3 महीने से बना रहे थे योजना, नाबालिग को दी ट्रेनिंग

पुलिस की प्रारंभिक पूछताछ के अनुसार सभी आरोपी 3 महीने से लूट को अंजाम देने की योजना बना रहे थे। जिसके लिए नाबालिग को खास तौर पर ट्रेनिंग दी गई। उसे घर में रखी हर एक चीज की जानकारी जुटाने के लिए कहा गया। वारदात को अंजाम देने से पहले नाबालिग नौकर ने अपने साथियों के साथ मिलकर घर में लगे सीसीटीवी का डीवीआर बंद कर दिया था। वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी डीवीआर भी अपने साथ ले गए थे।

वारदात सच्ची लगे इसलिए नौकर ने खुद को पिटवाया

पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्र ने बताया कि सोमवार रात 11 बजे घटना की जानकारी मिली। जैसे ही घटना की जानकारी लगी। हमने तत्काल शहर की नाकेबंदी करा दी। हमारी टीम ने महज 5 घंटे में आरोपियों को पकड़ लिया। घर के नौकर लक्ष्मण ने अपने साथियों को मंडीदीप से बुलाया था। घटना सही लगे, इसके लिए उसने खुद को भी अपने दोस्तों से पिटवाया। आरोपी घर से 50 लाख नकदी और सोने-चांदी के जेवरात ले गए। पुलिस ने 47 लाख रुपए जब्त कर लिए हैं।

'मामा का घर' के बाहर शुरू हुई सार्वजनिक प्याऊ

शिवराज-साधना ने घर के बाहर की नि :शुल्क पेयजल की व्यवस्था

भोपाल। भोपाल के लिंक रोड नंबर एक पर स्थित पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के सरकारी आवास 'मामा का घर' के बाहर राहगीरों के लिए सार्वजनिक प्याऊ की शुरुआत की गई है। पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान ने पत्नी साधना सिंह चौहान के साथ आज सार्वजनिक प्याऊ का उद्घाटन किया। इस मौके पर शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि गर्मी के मौसम में ठंडे साफ पीने की पानी की जरूरत पड़ती है। ऐसे में लोगों को यहां ठंड़ा पीने का पानी आसानी से मिल सकेगा। और लोगों की प्यास बुझ सकेगी। पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान ने भोपाल के स्मार्ट पार्क में चैत्र नवरात्रि के पहले दिन बेटियों के पैर छूकर आशीर्वाद लिया और फिर पौधारोपण किया। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने देश व प्रदेशवासियों को पावन पर्व चैत्र नवरात्रि की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि, आज से शक्ति का महापर्व नवरात्रि प्रारंभ हो रही है। मां के चरणों में प्रणाम करता हूं। शक्ति का यह पर्व हमको बहन बेटियों के सशक्तिकरण का संदेश देता है। आज अद्भुत दिन है। नवरात्रि, हिन्दू नववर्ष, गुड़ी पड़वा, चैती चांद की सभी बहनों, भाइयों और भांजे-भांजियों को हार्दिक बधाइयां, और बहुत-बहुत शुभकामनाएं।